नित नवल

रामदेव प्रसाद मण्डल
‘झारूदार’

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | २०२७

नित नवल

रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका । २०२७

प्रकाशन-विवरण

नित नवल रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

समीक्षा-निबन्धक क्रम

गीतांजलि झारू : झारूक रूपक आ जनपक्षधर काव्यचेतना ... 4

हमरा बिनु जगत सुन्ना छै : लोकजीवनक काव्यभाषा आ जनचेतना ... 24

अध्याय 1

गीतांजलि झारू : झारूक रूपक आ जनपक्षधर काव्यचेतना

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क 'गीतांजलि झारू' : सामाजिक सरोकार, गीतिशिल्प आ साहित्यिक मूल्यांकन

सारांश

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क 'गीतांजलि झारू' (२०१८) मैथिली जनाभिमुख काव्यक एकटा उल्लेखनीय संग्रह अछि। एकर पहिल खण्डमे २२ गोट गीत आ दोसर खण्डमे १४ गोट शीर्षकबद्ध 'झारू' रचना संकलित अछि। 'झारू' कविक उपनाम आ सामाजिक-सुधारक काव्यरूप—दूनू स्तरपर अर्थवान् बनैत अछि। जातिगत भेदभाव, भूख, धनक दम्भ, सत्ता-व्यवहार, शिक्षा, नैतिक विवेक आ अन्धविश्वास-विरोध एहि पोथीक प्रमुख चिन्ता अछि। समीक्षा निकट-पाठ, शैली-विश्लेषण आ लोकसाहित्यक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्यक सहायतासँ देखबैत अछि जे कवि दैनिक जीवनक सहज शब्द कँ सार्वजनिक प्रतिवादक भाषा बनबैत छथि। गीतक आवर्तन, सम्बोधनात्मक लय आ तीक्ष्ण नैतिक विरोध सम्प्रेषणक शक्ति पैदा करैत अछि; तकर संग उपदेशक विस्तार, बिम्बक सीमित वैविध्य आ सामाजिक कारणसभक नैतिक सरलीकरण एकर कलात्मक सीमा सेहो अछि। 'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' आ 'पहिल असली जनकवि' सन अभिधानक सार्थकता हुनक रचनामे व्यक्त जनपक्षधरताक आधारपर परखल गेल अछि; एहि आधारपर हुनका साहित्येतिहासमे अप्रमाणित प्रथमत्व नहि देल गेल अछि।

मुख्य शब्द : रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’; गीतांजलि झारू; मैथिली जनकाव्य; झारू-रूपक; गीतिशिल्प; सामाजिक न्याय; लोकभाषा; अन्धविश्वास-विरोध

१. जनकविताक प्रश्न आ झारूदारक काव्य-जगत

जनकविता अपन पाठक वा श्रोतासँ दूरी बना कऽ नहि, ओकर जीवनक बीच ठाढ़ भऽ कऽ बोलैत अछि। मुदा ‘जन’ शब्दक अर्थ केवल सरल बोली अथवा लोकप्रिय विषय नहि; भूखक अनुभव, श्रमक प्रतिष्ठा, सामाजिक अपमान, शासकीय अन्याय आ असमान अधिकारक प्रश्न काव्यक भीतर केहन रूप पबैत अछि, से सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क ‘गीतांजलि झारू’ एहि अर्थमे उल्लेखनीय अछि जे कवि अपन नैतिक असहमति कैँ अनूठा ‘झारू’ नाम दैत छथि। झारू घर-आँगनक साधारण वस्तु अछि; कविता ओकरा समाजक भीतरक मैल हटेबाक प्रतीकमे रूपान्तरित करैत अछि। पोथीक शीर्षकमे ‘गीतांजलि’क सांस्कृतिक गरिमा आ ‘झारू’क श्रम-संलग्न दैनन्दिनता एक संग आएल अछि।

मैथिली साहित्यिक परिचर्चामे झारूदार कैँ ‘मैथिलीक भिखारी ठाकुर’ आ ‘मैथिलीक पहिल जनकवि’ कहबाक परम्परा भेटैत अछि। विदेहक १५ दिसम्बर २०११ केर परिचयमे ई अभिधान दर्ज अछि। एहिमे कविक जनोन्मुख काव्यक महत्त्व आ लोक-सम्पर्कक आकांक्षा व्यक्त होइत अछि। किन्तु एहन उपाधि कैँ आलोचनाक समापन नहि, आरम्भ मानबाक चाही: ओ कोन लोकक दुख कहैत छथि? सामाजिक व्यथा कैँ कोन धुन, शब्द आ तर्क दैत छथि? हुनक गीतक प्रभाव केवल नीतिवचनमे सिमटैत अछि कि मानवीय परिस्थिति कैँ नब दृष्टिसँ देखबैत अछि? एहि प्रश्नसभक उत्तर कृतिक निकट अध्ययनमे निहित अछि।

‘गीतांजलि झारू’क खासियत एकर रचनात्मक निर्भीकता अछि। कवि शासक, धर्म, धन, गुरु, ज्ञान, समय आ स्वयं मनुष्यता कैँ आलोचनाक विषय बनबैत छथि।

हुनकर स्वर आक्रोशपूर्ण जरूर अछि, मुदा सर्वत्र निषेधात्मक नहि; प्रतिरोधक संग शिक्षा, सहजीवन, श्रम, कर्म आ परस्पर सम्मानक सकारात्मक आग्रह सेहो चलैत अछि। एहि दू प्रवाह—असहमति आ पुनर्निर्माण—कैँ बिना बुझने संग्रहक रचनात्मकता नहि खुलैत।

२. 'गीतांजलि झारू' : प्रकाशन, विन्यास आ काव्य-परिकल्पना

'गीतांजलि झारू'क प्रथम संस्करण पल्लवी प्रकाशन, निर्मली, सुपौलसँ २०१८ मे प्रकाशित भेल (ISBN 978-93-87675-61-2)। पोथीक परिचयमे 'गीत' आ 'झारू' कैँ अलग रचनात्मक पहचान देल गेल अछि। पहिल खण्डक संख्या-आधारित गीतसभ जीवन-व्यवहारसँ संवाद करैत अछि; दोसर खण्डक विषय-आधारित रचनासभ सामाजिक संस्थान आ मानवीय विकृतिसँ प्रत्यक्ष प्रश्न करैत अछि। एहि विन्यासमे निजी नैतिक शिक्षासँ सार्वजनिक आलोचना दिस गतिक आभास होइत अछि। शीर्षकक 'झारू' शब्द कविक सामाजिक भाषा-प्रयोगक केन्द्रीय चिह्न बनि जाइत अछि।

पोथीक लेखक-परिचय अनुसार रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क जन्म १३ जुलाई १९६७ कैँ सुपौल जिलाक रसुआर गाममे भेल। परिचयमे १९८४ मे मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करब, कृषि आ निजी अध्यापनसँ जीविका, तथा २००९ सँ लेखनक आरम्भक उल्लेख अछि। 'हमरा बिनु जगत सूना छै' आ 'गीतांजलि झारू' हुनक प्रकाशित रचनाक रूपमे उल्लिखित अछि। एहि आत्मपरिचयकैँ पोथीक साहित्यिक सन्दर्भक रूपमे पढ़ब प्रासंगिक अछि: शिक्षा, भूख, ग्रामीण जीवन आ रोजीरोटी पर बारम्बार लौटैत दृष्टि काव्यक अनुभव-क्षेत्रकैँ बुझबैत अछि, यद्यपि कविता कैँ केवल कविक जीवनीमे समेटल नहि जा सकैत अछि।

अनुक्रमणिकामे १ सँ २२ धरि गीत क्रमबद्ध अछि। तकर बाद 'शासक सुधारक महा झारू', 'हकार झारू', 'अभिवादन झारू', 'न्याय सुधारक झारू', 'निन्द्राशन झारू', 'पैसा सुधारक झारू', 'ज्ञान सुधारक झारू', 'समय सुधारक झारू', 'भूल

सुधारक झारू', 'धर्म सुधारक झारू', 'गुरु सुधारक झारू', 'मानव तंत्र झारू', 'अन्ध विश्वास सुधारक महा झारू' आ 'बेमनुखता सुधारक झारू'—ई चौदह शीर्षक दोसर खण्डमे संकलित अछि। नामकरणक ई सिलसिला कविक दृष्टिमे समाज-सुधारक क्षेत्रसभक नक्सा बनबैत अछि; प्रत्येक रचना मानो कोनो विशेष व्यवहार अथवा संस्थानक हिसाब माँगैत अछि।

एहि पोथीक समीक्षा तीनटा परस्पर जुड़ल स्तरपर करब उपयुक्त अछि। पहिल, रचनाक लय, सम्बोधन, पुनरुक्ति, प्रतीक आ कथ्यक परस्पर सम्बन्ध; दोसर, जाति, वर्ग, धर्म, शासन आ ज्ञानसँ सम्बन्धित नैतिक स्थापनाक आलोचनात्मक अर्थ; तेसर, लोक-सम्प्रेषण आ जनपक्षधर साहित्यक व्यापक परम्परासँ तुलना। रिचर्ड बाउमनक मौखिक कलासम्बन्धी विवेचन स्मरण करबैत अछि जे गेय अभिव्यक्ति केवल शब्द-क्रम नहि, सामाजिक सम्बोधनक क्रिया सेहो होइत अछि। झारूदारक रचनामे दोहराव आ प्रत्युत्तरक जे संकेत अछि, से सामूहिक उच्चारणक कल्पना उत्पन्न करैत अछि।

पोथीक दू भाग पढ़ैत काल एकटा महत्त्वपूर्ण अन्तर उभरैत अछि। गीतसभ प्रायः अनुभव, आग्रह आ सहज नैतिक सूत्रसँ आरम्भ होइत अछि; 'झारू' शीर्षकवाली रचनासभ समूच सामाजिक वृत्तिक सुधारक आदेश बनि उठैत अछि। गीतक लघुता आ झारूक विस्तारक बीच ई रूपान्तरण केवल आकारक परिवर्तन नहि, कविताक सम्बोधनक फैलाव अछि—व्यक्ति सँ परिवार, परिवार सँ समाज आ समाज सँ सत्ताक आलोचना धरि। एही क्रममे रचना कतेक बेर काव्यात्मक सघनता पबैत अछि आ कतेक बेर उपदेशक विस्तारमे ढील छोड़ैत अछि, तकर परीक्षण आवश्यक अछि।

३. गीत आ झारू : रचनाक दू स्वर

पहिल खण्डक गीतसभमे 'झारू—' आ 'गीत—'क आन्तरिक विभाजन अत्यन्त रोचक अछि। किछु गीतक आरम्भ छोट उद्घोष-जकाँ अछि; तकर बाद विस्तृत पदमे ओही विचारक सामाजिक अर्थ विकसित होइत अछि। गीत १ मे 'जीयो और जीने

दो'क सूत्र मनुष्यक परस्पर निर्भरता आ सहअस्तित्वक घोषणा करैत अछि। गीत २ मे आत्मसम्मानक चर्चा अपमान-विरोधसँ जुड़ैत अछि। एहि दूहरी संरचनामे उद्घाटन आ विस्तार, कथन आ पुनर्कथन, प्रेरणा आ व्याख्याक परस्पर गति बनैत अछि। पाठकक आँखिक आगाँ एकटा सम्भावित लोक-सम्बोधन आकार लैत अछि, जाहिमे उच्चारित सूत्र पुनः सामूहिक स्वीकृतिक रूप लऽ सकैत अछि।

कविक विषय-चयनक विस्तार गीत ६–७, गीत ९ आ गीत २० मे स्पष्ट अछि। शिक्षाक उपकार, वंचित बालकक पढ़ाइ, बेरोजगारी आ मानवीय अभावक प्रसंग एकत्र होइत अछि। गीत ९ मे 'गरीब' आ 'धनवान'क भूख कैँ उलट तुलनामे रखल गेल अछि; एहि व्यंग्यक कारण अमीरी केवल सम्पत्ति नहि, अतृप्त लालसाक प्रतीक बनैत अछि। गीत २० क 'भोला गरीबक दिन' सन आवर्ती सूत्रक भीतर रोटी आ अभावक दीर्घ पीड़ा बोली पबैत अछि। एहिसँ गीतसभक संक्षिप्त भाषा नीति-बोध मात्र नहि, जीवनक ठोस भेदक चिन्ता सेहो बनैत अछि।

दोसर खण्डक 'झारू' रचनासभमे समाज-सुधारक आग्रह स्पष्ट नाम पबैत अछि। शासकक विरुद्ध जनता, न्यायक विरुद्ध अन्याय, धनक विरुद्ध लोभ, धर्मक विरुद्ध जाति-अहंकार, ज्ञानक विरुद्ध अज्ञान, समयक विरुद्ध आलस्य—ई विरोधी जोड़ीसभ संग्रहक अर्थ-व्यवस्था बनबैत अछि। 'सुधारक' विशेषणक आवृत्ति बतबैत अछि जे कवि काव्य कैँ सामाजिक मरम्मतिक काम मानैत छथि। दैनन्दिन क्रिया 'झारब' एहि ठाम सार्वजनिक विवेकक रूपक अछि।

एहि क्रमक एक सौन्दर्यात्मक प्रभाव सेहो अछि: पाठक एकेक समस्याक स्वतन्त्र नाम सुनैत चलैत छथि, मुदा किछु आधारभूत मूल्य—मनुष्यता, समझ, श्रम, न्याय, संयोग आ सहजीवन—लगातार दोहराएल जाइत अछि। पोथी तैँ अलग-अलग विषयक संग्रह होइतहुँ एकटा साझा नैतिक विश्वदृष्टि अर्जित करैत अछि। एकरे संग काव्यक जोखिम सेहो जन्म लैत अछि: जँ प्रत्येक प्रश्नक समाधान एकहि प्रकारक सदुपदेश बनि जायत, तऽ समस्याक विशिष्ट सामाजिक इतिहास ओझल पड़ि सकैत अछि।

४. 'झारू'क रूपक : श्रम, प्रतिरोध आ सामाजिक सफाइ

झारू रोजमर्रा जीवनक ओहि साधनक नाम अछि जे घर अथवा आँगनक मैल हटबैत अछि। कविक विशेष उपलब्धि ई अछि जे ओ झारू कैं सजावटी प्रतीक नहि, आलोचनाक क्रियाशील औजार बनबैत छथि। झारूदारक संसारमे मैल केवल धूल नहि—घमण्ड, छुआछूत, लोभ, छल, अधर्म आ असमान व्यवहार सेहो अछि। झारू चलायब एतय नैतिक निष्क्रियताक विरुद्ध हस्तक्षेप थिक। वस्तुक श्रमसँ जुड़ल अर्थ कविता कैं जमीन पर राखैत अछि; 'झारू' शब्दक असाहित्यिक बुझाएब वाक्यक तीखापन बढ़ा दैत अछि। एहि रूपकक जनतान्त्रिक सामर्थ्य एकर दैनन्दिन परिचयमे निहित अछि।

'न्याय सुधारक झारू' मे न्याय केवल न्यायालयक औपचारिक काम नहि, मनुष्यक विवेक आ बराबरीक प्रश्न बनैत अछि। आरम्भिक पदमे 'धर्म' आ न्याय-संरक्षणक बिम्ब आएल अछि, आ आगाँ 'काम-क्रोध-मद-लोभ' सन दोषक विरुद्ध आग्रह। एहि ठाम कवि संस्थागत न्याय कैं नैतिक मनुष्यक योग्यतासँ जोड़ैत छथि। रचनाक शक्ति ई अछि जे साधारण पाठकक अनुभवमे न्याय-अन्याय पहिलेसँ मौजूद अछि; कविता ओकरा स्पष्ट सार्वजनिक उच्चारण दैत अछि। किन्तु कानूनी प्रक्रियाक ठोस असमानता नैतिक दोषक भाषासँ अधिक जटिल अछि—ई संग्रहक विमर्शक सीमा बनि रहैत अछि।

'शासक सुधारक महा झारू' 'जय हिन्द'क समवेत उद्घोषसँ आरम्भ होइत अछि। उद्घाटनक राष्ट्र-सम्बोधनक बाद कवि आदर्श शासकक प्रश्न उठबैत छथि। आरम्भिक पदमे जनता-स्नेह, नीति, एकता आ 'राज विधाक खेल' सन पद राजसत्ताक आलोचनाकैं जनकल्याणक कसौटी पर रखैत अछि। एहि विरोधमे सत्ता अपने-आप महान नहि; शासकक मूल्यांकन जनताक प्रति ओकर व्यवहारसँ होएत। लोकवाचिक लय ई कथनकैं संवेदनशील बनबैत अछि; औपचारिक राजनीतिक सिद्धान्तक बदला सुलभ नैतिक भाषा ओकर सार्वजनिक धार बनैत अछि।

‘सफाइ’क रूपक कतहु-कतहु सामाजिक विसंगति केँ सदाचार बनाम दुराचारक द्वैतमे सीमित करैत अछि। उदाहरणार्थ व्यवस्थागत अन्याय सँ लड़बाक लेल केवल ‘नीक मन’ पर्याप्त नहि; आर्थिक अवसर, संस्थागत पक्षपात आ ऐतिहासिक भेदक समझ सेहो अपेक्षित अछि। एहि सीमाकेँ स्वीकार कएनेहुँ कविक प्रतीकक उपलब्धि कम नहि होइत। झारूदार जटिल विचारकेँ सामान्य जीवनक एकटा साधनक सहारे कहबाक साहस देखबैत छथि—एहि साहस कृतिक स्मरणीय पहचान अछि।

५. जाति, धर्म आ समान मनुष्यताक प्रश्न

५.१ जाति-व्यवस्था आ समानताक नैतिक आधार

‘धर्म सुधारक झारू’क आरम्भिक पंक्ति “पैघ नहि कियो जाति लऽ कऽ / पैघ नहि कोनो धर्मसँ” कथ्यक स्पष्टता आ नैतिक साहसक कारण ध्यान खींचैत अछि। ‘पैघ नहि’क आवर्तन सामाजिक श्रेष्ठताक दावाकेँ एक-एक कऽ निरस्त करैत अछि। कवि जाति अथवा धर्मक नामसँ प्राप्त प्रतिष्ठाक बदला मनुष्यता आ कर्मकेँ मूल्यक आधार मानैत छथि। एहि ठाम कविता अपन आशयकेँ बिम्बक आड़मे नहि लुकबैत; ओकर सोझर कथनहि काव्यात्मक प्रतिरोध बनि उठैत अछि।

जातिवादी दम्भक विरोध कृतिक मानवतावादी केन्द्र अछि, मुदा एहि केन्द्रक दू तह चिन्हबाक चाही। पहिल तह मानवीय बराबरीक अविचल घोषणा अछि; दोसर तह जाति-आधारित सामाजिक अधिकार, भूमि, जीविका आ ऐतिहासिक वंचनाक व्याख्या अछि। झारूदारक पद पहिल तह पर अधिक तीक्ष्ण अछि, दोसर पर अपेक्षाकृत संक्षिप्त। ताहि कारण एहि काव्य केँ सामाजिक न्याय पर जनउद्बोधनक महत्त्वपूर्ण उदाहरण कहि सकैत छी, जाति-संरचनाक विस्तृत समाजशास्त्रीय विवेचन नहि।

५.२ धर्मसुधार, गुरु-सम्बन्ध आ विवेक

'अन्ध विश्वास सुधारक महा झारू' मे कवि धार्मिक आ सामाजिक रूढ़ि कैँ प्रश्नक कठघरामे अनैत छथि। अज्ञान, पाखण्ड आ विवेकहीन अनुकरण एहि रचनाक प्रधान लक्ष्य अछि। विशेष महत्त्व ई अछि जे अन्धविश्वास-विरोधक कथन कविक भाषा कैँ केवल धार्मिक उपदेशसँ आगाँ बढ़ा कऽ जाँच, विचार आ अनुभवक महत्त्व दिस लऽ जाइत अछि। कतिपय पदमे आलोचनाक शब्दावली तीक्ष्ण आ विवादास्पद अछि; मुदा मूल आग्रह मनुष्यकैँ स्वविवेकक अधिकार देबाक अछि।

संग्रहक भीतर 'गुरु सुधारक झारू' आ अन्धविश्वास-विरोधी रचनाक सह-अस्तित्व महत्त्वपूर्ण अछि। गुरु एतय ज्ञानक मार्गदर्शक भऽ सकैत छथि, मुदा अन्धविश्वास मनुष्यकैँ प्रश्नहीन समर्पण दिस ढकेलैत अछि। ई भिन्नता झारूदारक नैतिक संसारक एकटा सूक्ष्म पक्ष उघाड़ैत अछि: परम्पराकैँ पूर्णतः छोड़ब नहि, ओकर मूल्यांकन करब। तखनहो भक्ति आ तर्कक बीचक तनाव किछु ठाम स्पष्ट वैचारिक समाधान नहि पबैत; समीक्षाक लेल ई तनाव कृतिक जीवन्त प्रश्न अछि।

६. भूख, पैसा आ वर्गीय विषमताक आलोचना

गीत ९ क पंक्ति "गरीब भूखल कम रहै छै / भूखल बेसी रहै धनवान" एकटा धारदार विरोधाभास रचैत अछि। जे भूख गरीबक शरीर कैँ सतबैत अछि, ओही 'भूख' शब्दक दोसर अर्थ धनिकक नित्य बढ़ैत चाहना बनि जाइत अछि। एतय उपमा अथवा दीर्घ वर्णनक बदला एक शब्दक अर्थ-द्वित्वसँ वर्गीय असमानताक नैतिक विडम्बना खुलैत अछि। रचनाक सफल व्यंग्य एहि अर्थ-परिवर्तनमे अछि: पाठक 'भूख' कैँ पुनः सोचबाक लेल विवश होइत छथि।

'पैसा सुधारक झारू'क पहिल उद्घोष "पैसा पैसा हाय पैसा" ध्वनि आ अर्थक एक संग खेल अछि। 'पैसा'क पुनरावृत्ति लोभक उन्माद सुनबैत अछि; पंक्ति आगाँ धनकैँ 'जीवन केर जाल' कहैत अछि। एहि रूपकमे धन वस्तु नहि, मनुष्य कैँ लपेटि लेनिहार

शक्ति बनि जाइत अछि। परिवार, कर्ज, सम्बन्ध आ सम्मान पर पैसाक दबावक प्रसंग एहि आरम्भिक पदकेँ सामाजिक विस्तार दैत अछि। कविक आलोचना अनियन्त्रित धनलिप्सा पर केन्द्रित अछि; आर्थिक अन्यायक जटिल संरचना एहि नैतिक भाषा सँ पूर्णतः उद्घाटित नहि होइत।

गीत २० मे 'भोला गरीबक दिन'क आवर्तन अभावक समय केँ दीर्घ बनबैत अछि। भुखमरी आ रोजीरोटीक चिन्ता एकाध घटनाक प्रसंग नहि, दिन-प्रतिदिन दोहराबयवाली नियति थिक—गीतक आवृत्ति एहि निरन्तरता केँ अनुभव करबैत अछि। एहि ठाम रचनाकारक करुणा मात्र दानक अपील नहि; ओ श्रोताकेँ पूछैत अछि जे ककर जीवनक बोझ कोना वितरित भेल अछि। गीत ९ क व्यंग्य आ गीत २० क करुणा एक-दोसरक अर्थकेँ समृद्ध करैत छथि।

तथापि वर्गक प्रश्नक उत्तर अनेक ठाम लोभ छोड़बाक सीखमे समाप्त होइत अछि। कविताक नैतिक प्रहार जरूरी अछि, मुदा श्रमक मूल्य, उत्पादनक असमानता, रोजगारक असुरक्षा आ सम्पत्तिक वितरण सन प्रश्न पर दोसर प्रकारक विश्लेषण चाही। एहि अन्तर केँ देखैत संग्रहक सामाजिक संवेदनाकेँ कम नहि आँकबाक चाही; उलटे कविक जनपक्षधर भावनाक आर्थिकी-संबन्धी सम्भावनासभ स्पष्ट होइत अछि।

७. शिक्षा, ज्ञान आ समय : परिवर्तनक सकारात्मक भाषा

गीत ६ मे शिक्षा अज्ञानक अन्हार हटेबाक साधन अछि। गीत ७ मे बच्चाक पढ़ाइ केँ परिवार, भावी जीवन आ रोजगारक प्रश्नसँ जोड़ल गेल अछि। झारूदारक शिक्षाविचार केवल विद्वतापूर्ण प्रतिष्ठा नहि; साधारण जनक सामाजिक अवसर आ व्यवहारक सुधार सँ जुड़ल अछि। एहि प्रसंगमे कविता निषेधात्मक झारूक संग निर्माणक औजार सेहो बनैत अछि। सामाजिक भेदभावक विरोध तखन अधिक अर्थवान् होइत अछि जखन ज्ञानपर सभक पहुँचक आग्रह ओकरा संग रहैत अछि।

'ज्ञान सुधारक झारू' ज्ञान केँ मनुष्यक आत्मपरिचय, सजगता आ आचरणसँ जोड़ैत अछि। कवि ज्ञानक अभावकेँ केवल सूचना-अल्पता नहि, निर्णयक भूल आ

नैतिक अन्हारक कारण मानैत छथि। एहि विस्तारक लाभ ई अछि जे शिक्षा पाठशालाक चौखटसँ निकलि सार्वजनिक विवेकक प्रश्न बनैत अछि। मुदा 'ज्ञान'क बहुते अर्थ—पुस्तकीय अध्ययन, अनुभव, नैतिक बोध, आत्मिक अनुशासन—किछु पदमे बिना साफ विभाजनक एक संग आबैत अछि। एहि कारण रचनाक भावनात्मक ऊर्जा बेसी, वैचारिक परिभाषा अपेक्षाकृत अस्पष्ट रहैत अछि।

'समय सुधारक झारू' "संग समयक चलनाइ सीखू"सँ आरम्भ होइत अछि। समय एतय अनिर्वचनीय दार्शनिक प्रश्न नहि; श्रम, जागरूकता आ अवसरक सन्दर्भमे मनुष्यक जिम्मेवारी अछि। पलक महत्त्व, व्यर्थ विलम्बक क्षति आ कर्मक तत्परता छोट-छोट कथनमे व्यक्त अछि। समयक प्रति एहि व्यवहारमूलक दृष्टिमे कविक शिक्षकीय रुझान पहचानल जा सकैत अछि, यद्यपि कविता उपदेशक सहजताकेँ गेय लय सँ अधिक सजीव बनबैत अछि।

वॉल्टर जे. ऑंगक वाचिकता-विमर्श स्मरण करबैत अछि जे आवर्ती वाक्य, विरोधी युग्म आ स्मरणीय सूत्र मौखिक संचारमे अर्थकेँ स्थिर करबाक महत्त्वपूर्ण साधन होइत अछि। झारूदारक पुनरावृत्तिवाला पद एहि सिद्धान्तक आलोकमे पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा सिद्धान्तसँ आगाँ बढ़ि रचनाक निज सौन्दर्य पर ध्यान दैत देखब जरूरी अछि: कखन दोहराव लय बनबैत अछि आ कखन ओ एके बातक भार बढ़ा दैत अछि।

८. शासक, न्याय आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व

'शासक सुधारक महा झारू', 'न्याय सुधारक झारू' आ 'बेमनुखता सुधारक झारू' एकत्र पढ़ला पर संग्रहक संस्थागत संवेदना उभरैत अछि। शासक लेल जनता सर्वोपरि कसौटी अछि; न्यायक प्रश्नमे भेदभाव आ लोभ चुनौती अछि; मनुष्यता सम्बन्धी पदमे सत्ता-अहंकार, स्वार्थ आ छलक विरोध अछि। एहि रचनासभक विशेषता अधिकार-संरचनाकेँ साधारण नैतिक प्रश्नमे बदलि देब अछि। जनता केवल प्रशंसा

योग्य भीड़ नहि, राज-व्यवहारक मूल्यांकन करबाक अधिकारी समूहक रूपमे उपस्थित अछि।

'बेमनुखता सुधारक झारू' किछु ठाम पद, प्रतिष्ठा, नौकरी, उधार आ सामाजिक सम्बन्धक बिगाड़ कैँ एक संग देखबैत अछि। एहि रचनाक किछु प्रसंगमे मानवीय भरोसाक स्थान पर स्वार्थक विनिमय एबाक पीड़ा व्यक्त अछि। कविक 'मनुष्यता' अमूर्त सद्‌गुण मात्र नहि; कमजोरक संग उचित व्यवहार, साझा जिम्मेवारी आ अपमान-विरोधक सामाजिक कसौटी अछि। एही कारण करुणा आ रोष एक संग सुनाइ दैत अछि।

जेम्स सी. स्कॉटक प्रतिरोध-सिद्धान्त सत्ता आ अधीनस्थ समाजक सम्बन्धमे भाषाक भूमिका पर विचार करबाक अवसर दैत अछि। झारूदारक कवितामे आक्रोश लुकल कटाक्षक अपेक्षा खुलल सामाजिक सम्बोधन अधिक अछि। ओ नीतिक भाषाक भीतरसँ शक्तिक समीक्षा करैत छथि। यद्यपि एहि काव्यकैँ कोनो विशेष आन्दोलनक इतिहासक प्रत्यक्ष स्थानापन्न मानब उचित नहि, प्रतिरोधी उच्चारणक साहित्यिक मूल्य स्पष्ट अछि।

९. लोकभाषा, गीतिशिल्प आ काव्यात्मक सीमा

९.१ आवर्तन, सम्बोधन आ सामूहिक आवाज

झारूदारक प्रमुख शैलीगत उपकरण सम्बोधन, आवर्तन, सहज विरोध आ संक्षिप्त नैतिक निष्कर्ष अछि। "पैसा पैसा हाय पैसा", 'जय हिन्द', 'साधुवाद' सन उद्घोष मात्र वाक्य नहि; पाठकक मनमे ध्वन्यात्मक घेरा बनबैत अछि। अनेक गीतमे पंक्तिक पश्चात् '–२'क चिह्न पुनर्गायनक निर्देश जकाँ काज करैत अछि। एहिसँ गीत पढ़बाक संग-संग सुनबाक कल्पना होइत अछि। ध्वनि आ अर्थक ई साझेदारी संग्रहक गेय शक्ति अछि।

प्रश्न-विन्यास आ द्विपदी विरोध कविक अन्य साधन अछि। गरीब/धनवान, ज्ञानी/अज्ञानी, शासक/जनता, धर्म/कर्म, धन/मानवता—ई युग्म त्वरित नैतिक निर्णयक भूमि तैयार करैत अछि। कवि व्याख्याक दीर्घ मार्ग छोड़ि स्पष्ट विरोध रचैत छथि; पाठक अर्थ पकड़ि लैत अछि। मुदा प्रत्येक सामाजिक समस्या द्वैतमे नहि समाइत। तैँ एहि शैलीक प्रभावशीलता ओकर संक्षेपमे अछि, आ सीमा ओकर सरलीकरणमे।

१.२ बोलीक निकटता आ भाषिक मिश्रण

पोथीक भाषा घर-आँगन आ सार्वजनिक सभा—दूनू जगतसँ शब्द लैत अछि। 'छै', 'बाबू', 'माए-बाप', 'नोकरी', 'कुर्सी', 'पैसा', 'मानव', 'समय' सन शब्दक सह-अस्तित्व बतबैत अछि जे कवि लोकबोली, प्रचलित हिन्दी आ संस्कृत-आधारित नैतिक पदावलीक बीच चलैत छथि। एहि मिश्रणमे ग्रामीण संवादक सहजता अछि, संगहि सुधारक भाषणक ऊर्जावान तान सेहो। शास्त्रीय भाषा-शुद्धताक अपेक्षा पाठक धरि जल्दी पहुँचबाक आकांक्षा एतय बेसी प्रमुख अछि।

शब्द-संयोजनक ई खुलापन जतए लय आ अर्थक सहायता करैत अछि, ततए किछु पंक्तिमे वाक्य-विन्यास अल्प स्वाभाविक सेहो लागैत अछि। उपदेशक आवेगक कारण बिम्ब-कौशल, अन्तरानुभूति आ अर्थक बहुस्तरीयता सभ ठाम समान नहि रहैत। मुदा एहन असमानताकेँ लोकधर्मी भाषाक असफलता नहि कहब उचित; लोकसुलभता एकटा स्वतन्त्र काव्यगुण अछि, जकर मूल्यांकन सघनता आ सम्प्रेषण—दूनू कसौटी पर करबाक चाही।

१.३ काव्य-शक्ति आ काव्य-सीमा

संग्रहक सर्वाधिक सफल क्षण ओ अछि जखन एक छोट पद नब दृष्टि खोलैत अछि। गरीब आ धनवानक 'भूख'क विरोध, झारू द्वारा अन्यायक सफाइ, अथवा समयक

संग चलबाक आग्रह—एहि ठाम एक-दू सामान्य शब्द अनुभवक गहन विरोधाभास उद्घाटित करैत अछि। दोसर दिस किछु दीर्घ खण्डमे उपदेशक बारम्बार घोषणा काव्यिक अन्वेषणकेँ रोकैत अछि। आवर्तन लोकगीतक गुण होइतहुँ ओकर प्रत्येक पुनरावृत्तिक कलात्मक प्रयोजन होएब आवश्यक अछि। झारूदारक कविता एही कसौटी पर अपार सम्भावनाक संग किछु असमान निष्पादन प्रस्तुत करैत अछि।

१०. 'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' : जनपक्षधर तुलनाक अर्थ

भिखारी ठाकुरक भोजपुरी लोकनाट्यपरम्परा नाच, गीत, अभिनय, पात्रक संवाद आ 'बिदेसिया'क प्रवासन-वेदना सँ जुड़ल अछि। झारूदारक 'गीतांजलि झारू'मे प्रधान स्वर गेय, घोषणात्मक आ सुधारक अछि। दूनू लेखक लोकजीवनक समस्या केँ समाजक सम्मुख रखैत छथि, मुदा अभिव्यक्तिक माध्यम अलग अछि। भिखारी ठाकुरक नाट्यकर्मी-रूप अनेक पात्रक टकराव पर आश्रित अछि; झारूदारक काव्यमे कविक प्रत्यक्ष सम्बोधन प्रधान अछि। एही कारण तुलना जनचिन्ता, भाषिक सहजता आ सामाजिक चेतनाक धरातल पर फलप्रद अछि, विधागत अभिन्नता पर नहि।

बद्री नारायणक 'बिदेसिया: लोक संस्कृति एवं विस्थापन' लोकनाट्य, प्रवासन आ सामाजिक स्मृतिक सम्बन्ध बुझबाक महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ अछि। एहि परिप्रेक्ष्यसँ देखला पर भिखारी ठाकुरक रचना-विधान मनुष्यक बिछोहकेँ रंगमंचीय संवाद बनबैत अछि, जखनकि झारूदार सामाजिक अपमान आ नैतिक विचलनकेँ गीतात्मक उद्घोष बनबैत छथि। दूनू परम्परामे लोकभाषा जनस्मृतिक वाहक अछि; मुदा एकर अर्थ ऐतिहासिक प्रभावक बराबरी नहि।

लोकनाट्यपर लिखल पंकज कुमार आ अमोद कुमार राय सन अध्येताक अध्ययन भिखारी ठाकुरक अभिनयी-जगतक विशिष्टता रेखांकित करैत अछि। झारूदारक आलोचनात्मक परिचयमे 'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' कहला सँ जनगायन आ लोकसम्बोधनक समान आकांक्षा सूचित होइत अछि। तथापि झारूदारक स्वतन्त्र देन अनदेखल नहि होए: झारू सन घरेलू औजारक रूपक द्वारा संस्थागत अन्याय आ

साधारण मनुष्यक नैतिक संघर्षकेँ गीतक विषय बनायब हुनक अपन काव्यात्मक पहचान अछि।

अन्ततः ई तुलनाक उचित परिणाम समानता घोषित करब नहि, भिन्नताकेँ सटीक बुझब अछि। भिखारी ठाकुरक लोकनाट्य सामाजिक सम्बन्धक नाटकीय रूप दैत अछि; झारूदारक रचना ओही समाजसँ प्रत्यक्ष नीतिगत बहस करैत अछि। पहिलक मंचीय बहुवाचिकता आ दोसरक गेय नैतिक आग्रह, अपन-अपन कलात्मक विधा अनुसार मूल्यांकन माँगैत अछि।

११. 'पहिल असली जनकवि' : उपाधि आ साहित्येतिहास

'पहिल' कालक्रमक आ 'असली' मूल्यक दावा अछि; दूनू केँ एक अर्थमे पढ़ब उचित नहि। मैथिलीक पहिल जनकवि निर्धारण लेल जनगीत, श्रमिक रचना, लोकनाट्य, सामाजिक कविता आ अन्य लिखित-अलिखित काव्यधाराक दीर्घ ऐतिहासिक तुलना आवश्यक होएत। झारूदारक रचनामे जनजीवनक प्रति स्पष्ट पक्षधरता भेटैत अछि: अपमानित मनुष्यक सम्मान, भूखक प्रश्न, शिक्षाक अधिकार आ सत्ता पर आलोचनात्मक नजर हुनक काव्य केँ सामाजिक धरातल दैत अछि। एहि ठोस उपलब्धिक मूल्यांकन स्वतन्त्र रूपसँ सम्भव अछि; ओकरा सर्वप्रथम कहबाक ऐतिहासिक निर्णयक भार देब जरूरी नहि।

२०११ मे प्रकाशित परिचय बतबैत अछि जे ई अभिधान २०१८ क संग्रहसँ पहिनहु साहित्यिक सार्वजनिकतामे प्रचलित छल। तथापि उपाधि वा परिचय-कथन कोनो व्यापक साहित्येतिहासिक तुलनात्मक प्रमाणक बदला नहि लऽ सकैत। सम्मानजनक आलोचनाक उचित ढंग ई अछि जे कविक लिखल पदक असली शक्ति पर जोर देल जाय: झारूदारक आवाज सामाजिक दूरी केँ घटबैत अछि, असमानताक विरुद्ध सहज वाक्य गढ़ैत अछि, आ काव्यक विषयसभमे लोक-अनुभव केँ प्रतिष्ठा दैत अछि।

१२. कृतिक आन्तरिक तनाव आ आलोचनात्मक सवाल

'गीतांजलि झारू'क एकरूपता ओकर दोष नहि, मुदा ओकर भीतरक तनाव देखब जरूरी अछि। कवि जाति-धर्मक ऊँच-नीचक आलोचना करैत छथि आ गुरु-आस्थाक समर्थन सेहो; लोभक विरोध करैत छथि आ सामाजिक गरीबीक मार्मिक चित्र सेहो रचैत छथि; सत्ता कैँ जनहितक कसौटी पर राखैत छथि आ राष्ट्रभक्तिक स्वर सेहो अपनबैत छथि। एहिसभ विचारक सह-अस्तित्व जटिल जनजीवनक संकेत अछि। आलोचनात्मक प्रश्न बस एतबा अछि जे कोन कथन सामाजिक सम्बन्धक गहराई धरि पहुँचैत अछि आ कोन सदाचारक उपदेश पर ठहरि जाइत अछि।

'मानव तंत्र झारू' देह, ज्ञानेन्द्रिय आ मानवीय चेतनाक सम्बन्ध पर बल दैत अछि। ओकर तुरन्त बाद 'अन्ध विश्वास सुधारक महा झारू'क स्थापना विषयगत रूपसँ अर्थवान् अछि: मनुष्यक भीतर विचारक शक्ति जगबैत-जगबैत कवि सामाजिक रूढ़ि पर आघात करैत छथि। एहि क्रममे अनुभूति सँ विवेक आ विवेक सँ सामाजिक व्यवहार धरि एकटा रचनात्मक सेतु बनैत अछि। कविताक विधान वैज्ञानिक ग्रन्थक नहि, लोकनैतिक बोधक अछि; तदनुरूप ओकर अर्थ ग्रहण करब उचित होएत।

परिवार, माता-पिता, बेटा आ समाजक सम्बन्ध संग्रहमे पर्याप्त स्थान पबैत अछि। महिला-अनुभवक स्वतन्त्र स्वर, घरेलू श्रमक असमानता अथवा पितृसत्तात्मक दमनक जटिलता अपेक्षाकृत कम विकसित अछि। एहि ठाम सावधान मूल्यांकन जरूरी अछि: केन्द्रीय विषयक सीमित विस्तारक अर्थ महिला-विरोध नहि, मुदा आधुनिक जनपक्षधर साहित्यिक समीक्षा लेल एकटा महत्त्वपूर्ण रिक्ति अवश्य। 'मानवता'क सामान्य घोषणा कखन विशिष्ट पीड़ित समूहक अनुभव कैँ समेटैत अछि आ कखन ओ अनुभव एक सामान्य नाममे विलीन भऽ जाइत अछि, से प्रश्न उठैत अछि।

कविक लोकसम्बोधन गेय रूपमे प्रभावशाली अछि। मुदा रचनाक काव्यात्मक सम्बोधन, ओकर जनआधार आ सामाजिक परिणाम—ई तीन अलग विषय अछि। 'गीतांजलि झारू' पहिल विषयक पुष्ट प्रमाण दैत अछि; दोसर आ तेसरक अध्ययन लेल अलग सांस्कृतिक इतिहास आ लोकगायनक अनुसन्धान उपयोगी होएत। एहि

अन्तरकेँ स्पष्ट राखलासँ कविक उपाधि अथवा लोकप्रियताक अनावश्यक अतिशयोक्ति नहि होइत आ पोथीक साहित्यिक मूल्य अधिक साफ देखाइत अछि।

१३. आधुनिक मैथिली जनकाव्यमे स्थान आ मूल्य

एहि संग्रहक साहित्यिक योगदान तीनटा परस्पर सम्बन्धित स्तर पर देखल जा सकैत अछि। पहिल, 'गीत' आ 'झारू'क अलग-अलग संरचना एकहि काव्य-विश्व बनबैत अछि। दोसर, झारू सन श्रम-सम्बद्ध वस्तुकेँ अन्याय-विरोधक व्यापक रूपक बनायब कविक मौलिक नामकरण-सामर्थ्य अछि। तेसर, जाति, भूख, धन, शिक्षा आ शासनक प्रश्न सरल, मुखर आ गेय मैथिलीमे आएल अछि। एहि कारण कविता निजी भावक कोठरीमे बन्द नहि रहैत; ओकर पाठ सामाजिक व्यवहारक सार्वजनिक कसौटी बनैत अछि।

कृतिक काव्यात्मक सीमा सेहो स्पष्ट अछि। किछु स्थानपर बहुत जल्दी उपदेशात्मक निष्कर्ष आइब, बिम्बक पुनरावृत्ति, भाषिक मिश्रणक असमानता आ सामाजिक जटिलताक नैतिक द्वैतमे सरलीकरण रचनाक सौन्दर्य घटबैत अछि। दोसर दिस जे पद अनुभवक भीतरक विरोधाभास केँ संक्षेपमे पकड़ैत अछि, से स्मरणमे रहि जाइत अछि। साहित्यिक आलोचनाक न्याय ई नहि जे कविक समूच रचना बराबर ऊँचाईक मानि लेल जाय; न्याय ई अछि जे श्रेष्ठ पदक आभा आ शिथिल पदक सीमा दूनू निर्भीकतासँ चिन्हल जाय।

मैथिलीक समकालीन काव्य-पठनमे झारूदारक महत्त्व विशेषतः ताहि ठाम अछि जतए साहित्यिक भाषा आ सामान्य जनक बोलचालक दूरी पर प्रश्न उठैत अछि। सामाजिक अनुभवक नैतिक पक्ष केँ ओ काव्यक केन्द्रमे रखैत छथि। एकर सघनता, शिल्पगत वैविध्य आ ऐतिहासिक पहुँच पर विस्तारसँ चर्चा सम्भव अछि, मुदा 'गीतांजलि झारू' अपने-आपमे प्रतिरोधी लोकाभिमुख गीतक महत्त्वपूर्ण मिसाल रूपमे ठाढ़ होइत अछि।

१४. उपसंहार

‘गीतांजलि झारू’क असाधारणता ओकर विषयक नवीनतामात्र नहि, ओकर सम्बोधनक निर्भीकता अछि। कविता झारू बनि अन्याय, धनक मद, जातिगत अहंकार आ अन्धविश्वासक विरुद्ध उठैत अछि; फेर ओ शिक्षा, ज्ञान, समय, कर्म आ सहजीवनक सकारात्मक धरातल सेहो निर्मित करैत अछि। २२ गीतक लयात्मक आग्रह आ १४ झारू-रचनाक विषयगत विस्तार एहि एकहि जननैतिक विश्वक दू पक्ष अछि। जहिया कवि सामान्य जीवनक विरोधाभास कैँ छोट, तीक्ष्ण पदमे व्यक्त करैत छथि, तहिया हुनक लेखन विशेष काव्यात्मक शक्ति अर्जित करैत अछि।

‘मैथिलीक भिखारी ठाकुर’ सन अभिधान झारूदारक लोकाभिमुख आकांक्षा बुझबाक एकटा उपयोगी तुलनात्मक सन्दर्भ अछि; ओकरा बराबर विधागत सिद्धि अथवा प्रमाणित कालानुक्रमिक प्रथमत्व नहि मानबाक चाही। हुनक साहित्यिक मूल्य हुनक अपन कवितामे अछि—‘झारू’क श्रमशील रूपक, सहज शब्दावली, न्यायभावना आ सामाजिक सुधारक सतत आग्रहमे। एहि आधारपर ‘गीतांजलि झारू’ मैथिली जनपक्षधर काव्यक चर्चामे ठोस स्थानक अधिकारी पोथी अछि; ओकर आलोचना प्रशंसा आ सौन्दर्य-परीक्षण, दूनू सँ बनैत अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

मण्डल, रामदेव प्रसाद ‘झारूदार’। गीतांजलि झारू। प्रथम संस्करण। निर्मली, सुपौल: पल्लवी प्रकाशन, २०१८। ११६ पृष्ठ। **ISBN 978-93-87675-61-2**। (प्राथमिक पाठ)।

‘विदेह’, प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका। अङ्क ९६ (१५ दिसम्बर २०११), भाग ६। रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क परिचय। **https://gajendrathakur.blogspot.com/2011/12/part-vi.html** (अवलोकन १७ नवम्बर २०२६)।

विदेह। ‘मौलिक पद्य’क लेखक-सूचीमे रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क प्रविष्टि। **https://videha-ejournal.github.io/videha/verse.htm** (अवलोकन १७ नवम्बर २०२६)।

Bauman, Richard. Verbal Art as Performance. Rowley, MA: Newbury House, 1977. Reprint: Waveland Press, 1984. https://folklore.indiana.edu/research/publications/emeriti-publications/1984-verbal-art.html।

Kumar, Pankaj. “Situating Bidesia within the Extant Indian Folk Theatrical Tradition.” Research Hub International Multidisciplinary Research Journal 11, no. 8 (2024): 36-41. https://doi.org/10.53573/rhimrj.2024.v11n8.007।

नारायण, बद्री। बिदेसिया: लोक संस्कृति एवं विस्थापन। इलाहाबाद: उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, २००५। **ISBN 9788190274609**। **https://books.google.com/books?id=91FQAQAAIAAJ**।

Ong, Walter J. Orality and Literacy: The Technologizing of the Word. London/New York: Routledge, 1982; 2002 edition.

Rai, Amod Kumar. "Bhikhari Thakur's Bidesiya: A Folk Artefact in Bhojpuri." GNOSIS 3, no. 3 (April 2017): 45-53.

Scott, James C. Domination and the Arts of Resistance: Hidden Transcripts. New Haven: Yale University Press, 1990. https://yalebooks.yale.edu/book/9780300056693/domination-and-the-arts-of-resistance/।

अध्याय 2

हमरा बिनु जगत सुन्ना छै : लोकजीवनक काव्यभाषा आ जनचेतना

लोकजीवनक काव्यभाषा, 'झारू'क विधागत वैशिष्ट्य आ मैथिली जनचेतनाक साहित्यिक समीक्षा

सारांश

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क 'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै' (२०१२) सामाजिक परिवर्तनक आकांक्षासँ उद्भूत मैथिली कविता आ गीतक सङ्ग्रह अछि। एकर केन्द्रमे जनजीवनक दुःखक विलाप मात्र नहि, अपितु लोककेँ सोझे सम्बोधित करैत अन्यायक प्रतिरोधक स्वर अछि। 'झारू' नामक संक्षिप्त पद्य-रूप आ तकर बाद प्रायः उपस्थित गेय विस्तारक मेल कविक विशेष काव्य-योजना रचैत अछि। पुस्तक दहेज, स्त्रीक परवशता, जाति–धर्मक विभाजन, भूख, खेती, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास आ पर्यावरणक संकटकेँ नैतिक प्रश्नक संग जोड़ैत अछि। ई अध्ययन गीतक मुखड़ा–आवर्तन, रूपक-विधान, लोकसम्बोधन, व्यंग्यक धार, सामाजिक अनुभवक ठोस बिम्ब तथा मानवता-केन्द्रित कथनकर्ताक विश्लेषणक माध्यमसँ पुस्तकक रचनात्मक उपलब्धि आ सीमा दुनू चिन्हित करैत अछि। झारूदारक कवितामे स्त्रीक स्वाधीनताक उद्घोष आ पारम्परिक आदर्शक सहस्थिति, धर्माचारक आलोचना आ धार्मिक उपमानक पुनःप्रयोग, विज्ञान-प्रसारक उत्साह आ सरलीकरणक तनाव विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। 'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' आ 'पहिल जनकवि' सन सम्बोधनकेँ लेखकक लोकाभिमुख विशेषता आ मैथिली साहित्येतिहासक सापेक्षमे विवेचित कएल गेल अछि। निष्कर्षतः एहि काव्यसङ्ग्रहक विशिष्टता सामाजिक दोषकेँ 'बहारबाक' प्रतिज्ञा, प्रत्यक्ष लोकसंवाद आ गीतक माध्यमसँ सामूहिक नैतिक क्रियाक कल्पनामे अवस्थित अछि।

मुख्य शब्द: रामदेव प्रसाद मण्डल; झारूदार; हमरा बिनु जगत सुन्ना छै; मैथिली लोकाभिमुख काव्य; झारू; जनसम्बोधन; स्त्री-स्वर; सामाजिक व्यंग्य; साहित्येतिहास।

१. जनजीवन आ कविताक प्रत्यक्ष सम्बन्ध

मैथिली साहित्यक समृद्ध परम्परामे विद्यापतिक पदावलीसँ लऽ कऽ आधुनिक कविता धरि भाव, अनुभूति आ कलात्मक रूपक विविध प्रवाह अछि। रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' एहि परम्परामे अपन बाट लोकक दिनचर्या आ ओकर प्रत्यक्ष सामाजिक संघर्षसँ बनबैत छथि। गामक चौबटिया, खेतक आड़ि, पंचायतक दुआर, विवाहक खर्च, स्त्रीक असुरक्षा आ श्रमक अवमूल्यन हुनकर कविता लेल बाहरी विषय नहि, रचनाक मूल प्रेरक परिस्थिति अछि। कवि अपन पाठककेँ दूरसँ निरखैत दर्शक नहि मानैत छथि; ओ ओकरा 'बाबू', 'भैया', 'बहिनिया' कहि पुकारैत, ओकर गलतीपर फटकारैत आ अन्यायक विरोधमे उठबाक आग्रह करैत छथि। एहि प्रत्यक्ष सम्बोधनमे हुनकर जनकवित्वक सर्वाधिक ठोस आधार अछि।

'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै'क काव्ययात्रा 'प्रार्थना', 'झंडा गीत' आ 'अपन देश' सँ आरम्भ होइत अछि। तकर बाद छोट 'झारू'क संग गीतक क्रम बनैत अछि, आ उत्तरार्द्धमे 'मानवता', 'ज्ञान', 'कर्म', 'रामायण', 'त्याग–महाझारू' तथा 'पुलिस सुधारक महाझारू' सन लम्बा पद्य-समूह उभरैत अछि। प्रारम्भिक प्रार्थनामे अपन भीतर सद्विचार उत्पन्न करबाक विनय अछि; गीतसभमे समाजकेँ बदलबाक तेज आह्वान। एहन क्रम आत्मसंस्कारसँ सामुदायिक उत्तरदायित्व धरि पहुँचबाक रचनात्मक गति रचैत अछि। ई पुस्तकक विषय, शिल्प आ विचारक परस्पर सम्बन्ध बुझबाक मुख्य सूत्र अछि।

कवि 'सत्य', 'ज्ञान', 'सेवा' आ 'मानवता'क महिमा बराबर उद्घोषित करैत छथि, मुदा हुनकर कविता मात्र आदर्श-वचनपर आधारित नहि अछि। कखनहु ओ असिंचित खेतक फाटल दरार देखबैत छथि, कखनहु दहेजसँ त्रस्त जनक–सीताक मिथकीय

छविक माध्यमसँ वर्तमान समाजकेँ प्रश्न करैत छथि। एही कारण विषयक समीक्षामे दू स्तर अनिवार्य बनैत अछि—कविक सामाजिक मूल्य आ ओहि मूल्यकेँ मूर्त करबामे कविता कतेक सफल भेल। लोकसरोकारक महत्त्व स्वीकार करैत शिल्पगत असमानता, उपदेशक अत्यधिक आवर्तन आ कतिपय धारणाक अन्तर्विरोध चिन्हब एहि मूल्याङ्कनक आवश्यक अङ्ग अछि।

२. ग्रन्थक रचना-विन्यास आ आरम्भिक स्वर

सन् २०१२ मे श्रुति प्रकाशन, नई दिल्लीसँ प्रकाशित ई काव्यसङ्ग्रह 'माए केर स्मृतिमे' समर्पित अछि। आरम्भमे गजेन्द्र ठाकुरक आमुख कविक लेखकीय पहचान आ 'झारू' रूपकक अर्थ खोलैत अछि। लेखकक 'प्रेरणा'मे माए-बाबूक संस्कार, 'उदेस'मे घर-घर शान्ति–अमनक अभिलाषा, 'सहयोग'मे परिजन आ मित्रक संग-साथ, तथा 'गुरु'मे माएसँ शुरू भऽ संसार धरि ज्ञानग्रहणक भावना व्यक्त अछि। एहि आरम्भिक कथनसभमे कवि अपन काव्यकेँ व्यक्तिगत प्रसिद्धिक प्रदर्शन नहि, समाजप्रतिक उत्तरदायित्वक विस्तार बनबैत छथि। श्रद्धा आ प्रतिवादक एहि दोसरंगी भावभंगिमाक प्रभाव पूरा पुस्तकपर पड़ैत अछि।

काव्यसङ्ग्रहक रचना-विन्यासमे तीन प्रमुख चरण पहचानल जा सकैत अछि। पहिल चरणमे 'प्रार्थना', 'झंडा गीत' आ 'अपन देश' आह्वानमूलक सांस्कृतिक धरातल तैयार करैत अछि। दोसर चरणमे लघु 'झारू' आ विषयानुसार विस्तृत गीतक आवर्तन भेटैत अछि; छोट पद सामाजिक दोषकेँ नाम दैत अछि आ गीत ओही दोषक मानवीय परिणाम खोलैत अछि। तेसर चरणमे 'झारू–मानवता', 'झारू–ज्ञान', 'झारू–कर्म', 'झारू–रामायण', 'त्याग–महाझारू' आ 'पुलिस सुधारक महाझारू' क्रमबद्ध पद्य-शृङ्खलाक रूप ग्रहण करैत अछि। एक संग्रहक भीतर काव्य-अनुभूतिक एहन क्रमिक परिवर्तन ओकर सचेत बनावटकेँ स्पष्ट करैत अछि।

पहिल लघु झारू प्रायः तत्काल निष्कर्ष कहैत अछि; ओकर बादक गीत 'यौ', 'गै', 'हौ', 'रौ'क माध्यमसँ लोकसभा जकाँ बहस आरम्भ करैत अछि। अन्तिम दीर्घ झारूमे

एहि दू स्तरक संगम एकटा विस्तीर्ण उपदेशात्मक पद्य-शृङ्खलामे होइत अछि। एहिसँ संग्रहमे भाषण, कहबी, गीत आ नैतिक आख्यानक बीच एक गतिशील आवाजाही बनैत अछि। जखन कवि ठोस प्रसंग पकड़ैत छथि तखन एकर प्रभाव प्रखर अछि; केवल अमूर्त सद्‌गुणक सूची बनलापर प्रभाव तुलनात्मक रूपसँ मन्द पड़ैत अछि।

३. 'झारू' : साधारण वस्तुसँ सामाजिक रूपक धरि

गजेन्द्र ठाकुरक आमुखमे झारूक व्याख्या घरेलू आ कृषिसम्बन्धी झाड़न-उपकरणक रूपकसँ कएल गेल अछि। ओसारा बहारबाक बाढ़नि आ खेत-खरिहानक मैल हटएबाक झारूक व्यवहार अलग अछि। कवि एहि व्यावहारिक अन्तरकेँ कविता-सम्बन्धी विचार बनबैत छथि : सामाजिक दुर्गुणक मैल सहजहिँ नहि हटत, ओकरा ठोस प्रहार चाही। 'झारूदार' उपनाम तदर्थ केवल विनोदमय परिचय नहि, अपन समयक कुरीतिक विरुद्ध कलम उठेबाक प्रतिज्ञा अछि। आमुखमे 'नव विधा'क चर्चा एहि विशिष्ट प्रयोगकेँ रेखांकित करैत अछि; ओकर मौलिकता विशेष रूपसँ संग्रहक भीतर 'झारू' आ 'गीत'क परस्पर संयोजनमे प्रकट होइत अछि।

प्रारम्भिक झारू सामान्यतः दू दीर्घ पङ्क्तिमे एक संक्षिप्त नैतिक निष्कर्ष वा सामाजिक व्यंग्यक आकार ग्रहण करैत अछि। उदाहरणार्थ, दहेजक आलोचनामे परिणय-सूत्रकेँ भीतरसँ खायबला 'घुन'क प्रतिमा भेटैत अछि, आ पर्यावरणक खण्डमे वन, झील, नदी, वनवासी आ पठार एकहि संरक्षण-व्यवस्थाक अंश बनैत अछि। एहिमे सूत्रबद्धता अछि, मुदा ई मात्र कहबी नहि : सम्बोधित परिस्थिति आ आगामी गीतक बीच सम्बन्ध ओकर अर्थकेँ खुलैत राखैत अछि।

सभसँ भारी दहेज बेमारी, परिणय सूत्रक ई छी घुन।
रोबै छै सभ बेरा-बेरी, बहा-बहा आँसूमे खून।।

दहेज-विषयक एहि द्विपदीमे 'घुन' वस्तुतः भीतरसँ विवाह-व्यवस्था नष्ट करैत परजीवीक रूपक अछि। सामाजिक बीमारीकेँ भावनात्मक रुदनक संग जोड़ि कवि छोट कथनमे दमनक तन्त्र आ पीड़ित अनुभव दुनूकेँ राखैत छथि। ठीक बादक गीतमे

'कफ़न बनि गेलै दहेज'क भयानक प्रतिमा लगैत अछि; पहिल कथन रोगक निदान करैत अछि, दोसर ओकर सार्वजनिक आक्रोश बनैत अछि। एहि द्वि-स्तरीयता बिना झारूक विशिष्टता पूर्ण रूपेँ स्पष्ट नहि हएत।

'झारू'क साहित्यिक वैशिष्ट्य केवल नामकरणमे नहि, ओकर कार्यमे अछि। ई प्रायः दू पङ्क्तिमे दोषक तीक्ष्ण पहचान करैत अछि—कहबीक स्मरणीयता, व्यंग्यक प्रहार आ नैतिक निर्णयक तात्कालिकता एहि लघुतामे एकत्र होइत अछि। बादक गीत प्रत्यक्ष सम्बोधन, उदाहरण आ आवर्तनसँ तकरा जनसंवादमे बदलि दैत अछि। दीर्घ 'महाझारू'मे एही प्रक्रिया लम्बा अनुक्रमक रूप लैत अछि। तेँ एकरा केवल दोहा अथवा सामान्य नीति-पद्य कहि छोड़ि देब एकर विशिष्ट विन्यासकेँ अनदेखा करब; तथापि एतए काव्यरूपक नव प्रयोग आ साहित्येतिहासक पूर्ण प्रथमत्वक दावा एक नहि अछि।

४. गीत, झारू आ श्रोता-सृजनक कौशल

गीतसभक श्रोता-अभिमुखता हुनकर महत्त्वपूर्ण कलात्मक शक्ति अछि। 'यौ', 'हौ', 'गै', 'रौ' सन आह्वानसूचक ध्वनि, 'बाबू', 'भैया', 'बहिनिया' सन स्नेह–निकटता भरल सम्बोधन, आ 'जागू', 'बनू', 'रोपू', 'देखियौ' सन आज्ञार्थक क्रिया काव्यवाणीकेँ लोकक बीच पहुँचेबाक उपक्रम बनबैत अछि। पाठकक सोझाँ एकटा गाम, ओकर सामूहिक चौपाल, विवाद, प्रश्न आ सम्भावित उत्तर आकार लैत अछि। गीतक मुखड़ा शाब्दिक पुनरुक्ति मात्र नहि, सामुदायिक स्मृतिक आधार अछि; पुनःपुनः फेरबाक कारण विचार व्यक्तिगत कथनसँ सामूहिक उच्चारण बनैत अछि।

'मानव मारै छै मानवताकेँ' सँ आरम्भ गीतमे कवि समाजक विवेकशील लोककेँ एक संग बैसि सोचबाक लेल आमन्त्रित करैत छथि। 'कलमकेँ रामक तीर-कमान' बनएबाक बिम्ब कविताकेँ हिंसाक पक्षधर नहि, अन्यायक विरुद्ध नैतिक संघर्षक साधन बनबैत अछि। नेता–अफसरक स्वार्थ आ जनताक आपसी फूटपर चोट करैत एकटा दोसर गीत एकताकेँ केवल शुभेच्छा नहि, आत्मसमालोचनाक कठिन अभ्यास

मानैत अछि। एतए कविता शिकायतकेँ उत्तरदायित्वमे बदलैत अछि : दोष सत्तामे अछि, मुदा लोककेँ सेहो अपन भय, लोभ आ विभाजनसँ बाहर निकलए पड़त।

गीतक बारम्बार आबैत युग्म—सत्य–असत्य, ज्ञान–अज्ञान, लोभ–सेवा, शान्ति–हिंसा आ मानवता–दानवता—कविक सामाजिक दृष्टिक सहज पहचान बनैत अछि। युग्मसभक सरलता गीतकेँ स्मरणीय करैत अछि, मुदा एकर अत्यधिक प्रयोग सामाजिक जटिलताकेँ सदाचार–दुराचारक दूटा कोठरीमे सीमित कऽ सकैत अछि। कविताक सशक्त क्षण ओ अछि जतए अमूर्त उपदेशक स्थानपर असिंचित खेत, स्त्रीक फाटल साड़ी, घूसखोर पंचायत अथवा दहेजक कफन सन दृश्य सोझाँ अबैत अछि। एहन बिम्ब कविक नैतिक आक्रोशकेँ अनुभवक विश्वसनीयता दैत अछि।

५. शीर्षक-पद्य : 'हमरा'क कथनकर्ता मानवता अछि, कवि-व्यक्ति नहि

पुस्तकक शीर्षकक अर्थपर विचार करैत ओकर वास्तविक पाठस्थान देखब अनिवार्य अछि। 'झारू–मानवता'क छठम पदमे 'हमरासँ पहिले कोनो नै शासन' आ 'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै'क अभिव्यक्ति अछि। एहि पदक आगू-पाछू 'मानवता' अपन सार्वभौम विधान, जाति-धर्मसँ परे समानता आ प्रत्येक मानवमे नैतिक अस्तित्वक घोषणा करैत अछि। फलतः 'हमरा'केँ कवि रामदेव प्रसाद मण्डलक अहंकारक सीधा वक्तव्य मानि लेब निकटपाठक भूल हएत। एहि क्रममे मानवता स्वयं प्रथम-पुरुषक वाचक रूपमे उपस्थित अछि—मानवीकरणक एहि युक्तिसँ अमूर्त नैतिक तत्त्व सार्वजनिक आत्मकथन बनैत अछि।

हमरासँ पहिले कोनो नै शासन, नै छै कोनो धर्मक विधान।
हमरा बिनु जगत सुन्ना छै, हटैबला छै पशु समान।।

एहि वक्तव्यक दार्शनिक व्यापकताकेँ बुझबाक लेल 'मानवता'क नैतिक सार्वभौमिकताक पाठ पर्याप्त अछि। आमुखमे एकरा बौद्ध शून्यवाद आ अद्वैत-दर्शनसँ जोड़बाक एक प्रस्ताव रखल गेल अछि; तथापि मात्र 'सुन्ना' शब्दक ध्वनिसाम्यसँ दार्शनिक 'शून्यता' सिद्ध नहि होइत। बौद्ध शून्यताक परतन्त्र-समुत्पाद सम्बन्धी

विशिष्ट तर्क आ अद्वैतक ब्रह्म–आत्मन् सम्बन्धी सिद्धान्त एहि पदसमूहमे क्रमबद्ध रूपमे उपस्थित नहि अछि। तेँ ई तुलना सम्भाव्य व्याख्यात्मक संकेत अछि, प्रमाणित दार्शनिक स्रोत-सम्बन्ध नहि।

मानवता-खण्डक एक उल्लेखनीय तत्त्व सत्यक अपेक्षा तर्कक अधिकारपर आग्रह अछि। एक पदमे प्रश्नित कथनकेँ 'तर्क लगा' स्वीकार करबाक बात अबैत अछि। एहि दृष्टिसँ 'मानवता' केवल करुणाक भाव नहि, परीक्षण-योग्य नैतिक व्यवस्था बनएबाक आकांक्षा अछि। मुदा एकहि शृङ्खलामे 'नरक', 'धर्मक पिता' आ धार्मिक मुक्ति-सदृश रूपक उपस्थित अछि; तदर्थ कविक विवेकवाद धर्मविरोधी निर्वातमे नहि, पारम्परिक धार्मिक शब्दावलीक भीतर नवनिर्मित होइत अछि।

६. स्त्री-प्रश्न : दयापात्रसँ स्वाधीन वक्ता धरि

मिथिलाक नारीजीवनपर केन्द्रित गीतमे नारीकेँ 'परबस' कहल गेल अछि; फाटल साड़ी, पुरुषप्रधान गाम, चुप्पीमे सहल अत्याचार आ स्त्री नेताक कुर्सीपर पुरुषक वास्तविक नियंत्रण—ई सभ महज घरेलू कष्ट नहि, सत्ता-वितरणक संकेत अछि। 'नारी नेतो जँ बनै छै / कुरसी पुरुष ओकर धुनै छै' पद राजनीतिक प्रतिनिधित्व आ निर्णयाधिकारक फाँक चिन्हित करैत अछि। कवि समस्या स्त्रीक चरित्रमे नहि, सामाजिक पुरुषाधिकारक संरचनामे देखबैत छथि।

'हम मिथिलानी' गीत एही विवशताक विरोधी स्वर उत्पन्न करैत अछि। एकर 'हम' स्त्रीक स्वयं बोलबाक स्थान अछि; शिक्षा ग्रहण, अधिकारक रक्षा, गुलामीक जञ्जीर तोड़ब आ स्त्रीसभक सामूहिक एकता ओकर घोषित कार्यक्रम अछि। 'नव डगर अपनेसँ गढ़बै' विशेष अर्थपूर्ण पङ्क्ति अछि : मुक्ति बाह्य उद्धारक लेल प्रतीक्षा नहि, आत्मसक्रियता कहल गेल अछि। एहि रचनामे कवि स्त्रीकेँ सम्बोधित करबाक अपेक्षा हुनकर मुखसँ समाजकेँ सम्बोधित करबैत छथि।

हम मिथिलानी मिथिला के नारी, रहबै नै कमजोर यौ।
नव डगर अपनेसँ गढ़बै, धरबै शिक्षा के डोर यौ।

मुदा एहि प्रगतिशील स्वरकेँ पुस्तकक सम्पूर्ण लैङ्गिक दृष्टिक अनिवार्य निष्कर्ष मानब असावधान हएत। 'अपन देश'मे हर नारीकेँ पार्वती आ प्रत्येक नरकेँ महेशक आदर्श रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि; 'झारू–रामायण'क उत्तरवर्ती प्रसंगमे पतिव्रताक आदर्शक मान्यता सेहो भेटैत अछि। अर्थात् शिक्षित स्वाधीन नारीक कल्पना आ धार्मिक-गृहस्थ आदर्शक मर्यादा एकहि कविताजगतमे सह-अस्तित्वमे अछि। ई असंगति नुकाबय बजाय एकरा सामाजिक परिवर्तनक अधूरा किन्तु महत्त्वपूर्ण तनाव मानब उचित।

दहेजक वर्णन दू प्रकारेँ होइत अछि : एक ठाम जनक–सीताक मिथकीय पारिवारिक व्यथा, दोसर ठाम विवाह-संस्कारकेँ नष्ट करैत आर्थिक रोग। दुनूमे जातीय–पितृसत्तात्मक विवाह-व्यवस्थाक आर्थिक दबाव दृश्य होइत अछि। तथापि लड़कीक सम्पत्ति-अधिकार, विवाहक विकल्प वा घरेलू श्रमक संस्थागत मूल्यांकनपर पुस्तक व्यापक चर्चा नहि करैत। गीतक सुधारवादी स्वरक ई पाठगत सीमा अछि, जेकरा स्वीकार कएने बिना पूर्ण नारीमुक्तिवादी दार्शनिक प्रणाली घोषित नहि कएल जा सकैत अछि।

७. जाति, धर्म, साम्प्रदायिक सम्बन्ध आ बहुभाषिक मिथिला

साम्प्रदायिक सद्भावपर केन्द्रित गीत हिन्दू, मुस्लिम, सिख आ ईसाईकेँ एकहि गाछक फूल मानि जाति–धर्मक सीमा तोड़बाक आग्रह करैत अछि। 'अपन देश'मे अतिथि-संस्कारक प्रसंगमे अल्लाह, ईसू आ गणेशक संयुक्त उल्लेख अछि। ई गद्यात्मक धर्मनिरपेक्ष घोषणासँ भिन्न एक लोकधर्मी प्रतिमात्मक समावेशन अछि : अलग-अलग धार्मिक प्रतीक एकहि घरेलू आ सामाजिक अनुभवमे रहैत अछि। एहि ठाम कविक मैथिली सैद्धान्तिक 'शुद्धता'क अपेक्षा मिश्रित जीवनलोकक भाषिक तर्कक संग अछि।

नव साहित्येतिहास-सम्बन्धी शोध एहि समावेशनक ऐतिहासिक अर्थकेँ धार दैत अछि। उफाक पैकरक २०२६क अध्ययन मैथिली मरसिया आ भिन्न जाति–धर्मक गायक–श्रोताक योगदानकेँ रेखांकित करैत अछि; विशेषतः उन्नैसम शताब्दीक

संकलनसभमे गैर-उच्चवर्णीय जनपदीय आवाजक उपस्थिति उद्घाटित करैत अछि। तदर्थ झारूदारक सम्मिलनवादी स्वर मूल्यवान अवश्य अछि, मुदा मैथिलीमे पहिल बेर विविध धार्मिक समुदाय लेल साहित्यिक स्थान खुलबाक दावा नहि करैत। ओ पहिने सँ विद्यमान बहुस्वरीय इतिहासक एक आधुनिक पुनःउच्चारण अछि।

जाति-विमर्शक भाषिक बल 'ऊँच–नीच भुलू', 'सभकेँ अपन मीत मानू' आ कर्मक आधारपर मानवीय प्रतिष्ठा निर्धारित करबाक आग्रहमे अछि। तकर बावजूद जाति-उत्पीड़नक संस्थागत संगठन, भूमिसम्बन्ध, प्रतिनिधित्व आ ऐतिहासिक आन्दोलनक पृथक विश्लेषण एहि पाठमे सीमित अछि। एहि सन्दर्भमे धार्मिक सामंजस्यक नैतिक सूत्र आ सामाजिक न्याय सम्बन्धी वास्तविक नीतिगत संघर्षक बीच दूरी चिन्हब आलोचनाक आवश्यकता अछि; नैतिक समता-कथन आवश्यक अछि, पर्याप्त नहि।

८. श्रम, भूख, कृषि आ ग्रामीण अर्थव्यवस्था

'केना जीबै छै लोक एतए केर / देखियौ जा कऽ करीबसँ'क आग्रह साहित्यक परोक्ष सहानुभूतिकेँ प्रत्यक्ष निरीक्षणमे बदलैत अछि। एहि चित्रणमे खाली पेट, वस्त्रहीन तन, छतविहीनता आ कोदो–मरुआ सन साधारण भोजनक बिम्ब सामाजिक असमानताकेँ दृश्य बनबैत अछि। किछु गीतमे गरीबी नैतिक च्युतिक फल मानल जाइत अछि, मुदा एहि प्रसंगमे एकर वस्तुगत उत्पीड़क सम्बन्ध सेहो सोझाँ अबैत अछि; सामन्तवादक मारि खायल शोषितक उल्लेख एक स्पष्ट संरचनात्मक संकेत अछि।

खेती सम्बन्धी प्रसंगमे कविक निरीक्षण अधिक ठोस अछि। असिंचित खेत, पानि–बिजलीक अभाव, फाटल धरती आ टूटल घरकेँ 'कैमरा' सँ चित्रित कऽ राजधानीमे देखेबाक प्रस्ताव एहि गीतक विशेषता अछि। कैमरा एतए तथ्य-संग्रह आ जवाबदेहीक साहित्यिक यन्त्र बनैत अछि : दूरस्थ सत्ता जकरा देखैत नहि, ओकर दृश्य प्रमाण पेश कएल जाए। एहि पदमे मिथिलाक समस्या 'केवल नैतिक पतन' नहि रहि सार्वजनिक निवेश आ प्रशासनिक उपेक्षाक विषय बनैत अछि।

कृषिजीवन सम्बन्धी एक गीत गोबरकेँ खेतक उर्वरता, घरेलू ईन्धन आ संसाधन-प्रबन्धनक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि; वृक्षारोपणक गीतमे प्रति वर्ष पाँच गाछ लगएबाक आह्वान अछि। बेरोजगारी, श्रम-निष्क्रियता, प्रखण्ड-प्रशासन, मुखिया, पंचायत आ वोटक व्यापारक आलोचना सेहो एक संग चलैत अछि। मुदा 'गरीबी हटेबाक लेल श्रम करू' प्रकारक उपदेश कहियो-कहियो भूमिहीनता, बाजार, कृषि-जोखिम वा प्रशासनिक नीति सन संरचनात्मक कारककेँ अस्पष्ट कऽ दैत अछि। पुस्तकक सामर्थ्य अनुभवक घनत्व अछि; सीमा आर्थिक कारणशृङ्खलाक अपर्याप्त विस्तार।

९. शासन, लोकतन्त्र, नागरिकता आ राजनीतिक व्यंग्य

राजकीय पद, जनसेवाक मर्यादा आ वोटक नैतिकता पुस्तकक पुनरावर्ती चिन्ता अछि। नेता–अधिकारीक लूट, पंचायतक न्याय, घूस, वोट-बिक्री, मुँहदेखी पंचायती आ अफसरक सुखक बरक्स जनताक भूखक विरोधाभास एकर राजनीतिक गीतसभमे उपस्थित अछि। कविक राजनीतिक आलोचना व्यक्तिनिष्ठ भ्रष्टाचारक निन्दासँ शुरू भऽ संस्थागत अन्याय धरि पहुँचैत अछि; लोकसभा वा विधानसभाक अमूर्त अवधारणाक अपेक्षा गामक पंचायत, सी.ओ. आ बी.डी.ओ. ओकर वास्तविक सत्ता-संकेत अछि।

नीतीश कुमार सम्बन्धी गीतसभ एकरे भीतर महत्त्वपूर्ण तनाव उपस्थित करैत अछि। एक गीतमे कवि राज्यक शीर्ष नेतृत्वकेँ असिंचित खेत देखेबाक योजना बनबैत छथि; दोसर गीतमे सड़क, चकबन्दी, बिजली आ न्यायिक सुधारक आशावादी प्रत्याशा व्यक्त करैत छथि। ई विरोध नहि तँ कमसँ कम समकालीन सत्ता सम्बन्धी दोहरी सम्बोधन-पद्धति अवश्य अछि : शासनसँ प्रश्न सेहो, शासनसँ प्रत्याशा सेहो। रचनाक सटीक तिथि बिना एहि स्वरसभकेँ नीति-सफलताक प्रमाण वा कालानुक्रमिक राजनीतिक परिवर्तन घोषित कएल नहि जा सकैत अछि।

नागरिक कर्तव्य-विषयक गीतमे 'सातो करतब' स्मरणीय नैतिक सूत्र बनैत अछि। कवि संविधानक आदर, राष्ट्रीय एकता, स्त्रीक मान, हिंसाक त्याग आ पर्यावरणक

रक्षाकेँ साधारण श्रोताक व्यवहारसँ जोड़ैत छथि। एकर साहित्यिक प्रयोजन संहिताक सम्पूर्ण व्याख्या नहि, सामूहिक कर्तव्यबोधक संक्षिप्त गीतात्मक रूपान्तरण अछि। एहि ठाम नागरिकताक कठिन विचार गीतक स्मृतियोग्य आवाज बनैत अछि; विधिसम्मत सूची आ साहित्यिक चयनक भेद बनाए राखितो कविताक लोकशिक्षण-शक्ति स्पष्ट देखाइत अछि।

राजनीतिक व्यंग्यमे शरीर आ भोजनक प्रतिमाक तीव्रता उल्लेखनीय अछि : शासक ‘घी मलिदा’ खात छथि आ जनता सूखल रोटीपर निर्भर अछि। एहि बिम्बमे आर्थिक वितरणक नैतिक आरोप गीतक माध्यमसँ सहजे ग्रहणीय बनैत अछि। एकर विपरीत सार्वदेशिक देशभक्ति-गीतमे राष्ट्रध्वज आ भारतीय आदर्शक उच्च प्रतिमा अछि। कवि राष्ट्रकेँ अस्वीकार नहि करैत छथि; राष्ट्रक नैतिक वचनकेँ प्रशासनिक व्यवहारक समक्ष राखि जाँचैत छथि। एहि तरह देशभक्ति आ सत्ता-समालोचना सह-अस्तित्वमे रहि जनकाव्यक आन्तरिक गतिशीलता रचैत अछि।

१०. पर्यावरण, वनवासी आ विज्ञानक जनोपयोगी भाषा

पर्यावरणक प्रश्न पुस्तकमे सजावटी प्रकृति-चित्र नहि अछि। भूमि, जल, वायु आ ध्वनि-प्रदूषण; वाहनक धुआँ; अगिला पीढ़ीक जीवन; गङ्गाक दुर्दशा; वन, झील, नदी आ वनवासी; वृक्षारोपण, छाया, औषधीय उपयोग, माटि-संरक्षण आ वन-कटानीक संकट—ई सभ मिलि एक निरन्तर विषयवृत्त बनबैत अछि। विशेष उल्लेखनीय ई जे वनवासीक अस्तित्वकेँ वन-संरक्षणक संग राखल गेल अछि; तथापि वनवासीक अधिकार, विस्थापन आ वनप्रबन्धनक पृथक सामाजिक प्रश्नक विस्तृत विवेचन अनुपस्थित अछि।

‘झारू–ज्ञान’मे विज्ञानक अनेक विषय—वायु, नाइट्रोजन, धरती, तत्त्व आ ग्रह-नक्षत्र—सामान्य जनक लेल मैथिली पद्यभाषामे राखल गेल अछि। ई प्रयासक विशेषता ज्ञानकेँ विद्यालयक बन्द कोठरीसँ बाहर आनबाक इच्छा अछि। मुदा ज्ञानक लोकप्रियकरणमे सरलता आ तथ्यक भेद सुरक्षित रहबाक चाही। वायुमण्डलक समस्त

ऊँचाइ ‘अठारह किलोमीटर’ मानब सही वैज्ञानिक वर्णन नहि; एहि तरहक सरलीकरण कविताक शिक्षात्मक उद्देश्यकेँ कमजोर करैत अछि। तैँ ‘ज्ञान’ खण्ड कविक उत्साहक महत्त्वपूर्ण उदाहरण होइतहुँ एकर सूचना-सामग्री आलोचनात्मक प्रश्नसँ परे नहि अछि।

‘पुलिस सुधारक महाझारू’मे POLICE शब्दक प्रत्येक अक्षरसँ पुलिसक वांछित व्यवहार बतएबाक युक्ति प्रयुक्त अछि। शिष्टाचार, लोकहित, जाँच, न्याय आ सदाचरणक शब्दसमूह मिलि पेशाक एक स्मरणीय नैतिक प्रतिमा बनबैत अछि। एकर आधार वास्तविक शब्दव्युत्पत्ति नहि, वरन् अक्षरकेँ नैतिक शिक्षाक सहारा बनएबाक कविक कल्पना अछि। एतए भाषिक खेलक सफलता कानूनक शब्दार्थ बतएबामे नहि, पुलिसक व्यवहारक प्रश्न उठएबामे अछि; संग्रहक अन्तमे पुलिस आ साधारण गरीब नागरिकक सम्बन्धपर कएल प्रहार एहि कल्पनाकेँ आलोचनात्मक धार दैत अछि।

११. कर्म, धर्म, रामायण आ व्यवहारधर्मी नैतिकता

‘झारू–कर्म’मे प्रवचनक उपयोगिता प्रश्नांकित कऽ लेखक स्वयं कहैत छथि जे बाबासभ बहुत उपदेश देलनि, आब कर्मक सन्देश सुनल जाए। ज्ञान–कर्मक सम्बन्ध परस्पर सहयोगी अछि : मात्र धारणात्मक ज्ञानसँ नहि, सद्कर्मक अभ्याससँ सुखक सम्भावना बनैत अछि। पूर्ववर्ती गीतसभमे कर्म–भाग्य सम्बन्धी पद लोकक नियतिवादसँ एक संवाद रचैत अछि; ‘बाबू करम कलमसँ लिखू अपन भाग’क कथन भाग्यकेँ सक्रिय मानव-अभिकर्तृत्वक अधीन आनबाक प्रयत्न अछि।

‘झारू–रामायण’मे रामायण पूजनीय ग्रन्थ मात्र नहि, आचरणकेँ बदलबाक सार्वजनिक नैतिक-कथा बनैत अछि। पूजा-पाठ आ अर्थहीन पाठपर कविक आलोचना अछि : कथा सुनब पर्याप्त नहि, मर्यादा आ कर्मक अनुकरण आवश्यक अछि। मुदा एहि समूहक स्त्रीचरित्र-विवेचनमे पारम्परिक पतिव्रता-आदर्शक पुनरागमन सेहो देखल जाइत अछि। तैँ रामायणक पुनर्पाठ सम्पूर्ण वैकल्पिक धर्मदर्शन नहि, सुधारवादी आ परम्परानिष्ठ प्रवृत्तिक मिलनबिन्दु अछि।

'त्याग–महाझारू'मे अहं, लोभ आ असत् कर्मक त्यागकेँ नैतिक मुक्ति कहि प्रस्तुत कएल गेल अछि। धार्मिक आचरणपर केन्द्रित पदसभमे मन्दिर–मस्जिद, मूर्तिपूजा आ धार्मिक कारोबारपर तीक्ष्ण प्रश्न अछि। कवि धार्मिक परम्परा अन्तर्गत प्रचलित दया, सेवा, सत्यक मानदण्डक सहारे एहि संस्थागत रूपसभक आलोचना करैत छथि। एहि कारण हुनकर धर्मविमर्शकेँ 'पूर्ण नास्तिकता' कहब जतेक गलत, ओतेक ओकरा सरल रूढ़िवाद कहब। ई लोकमंगलकेँ धार्मिक वैधताक निर्णायक कसौटी बनएबाक प्रयत्न अछि।

१२. 'पुलिस सुधारक महाझारू' : प्रशासनिक व्यवहारक काव्यात्मक प्रतिप्रश्न

अन्तिम खण्डमे कवि पुलिस-सेवाकेँ भय अथवा दण्डाधिकारक पर्याय बनएबाक बजाय शिष्टता, विधिसम्मत व्यवहार, न्यायप्रियता आ जनता प्रति संवेदनशीलताक रूपमे देखबाक आग्रह करैत छथि। अक्षर–अक्षर अर्थक स्मरणीय युक्ति एतए एक प्रकारक जनशिक्षात्मक पद्य-विन्यास अछि। विशेष बात ई जे सुधारक आदर्श बतएबाक संग कवि पुलिस–अपराधी गठजोड़ आ निर्धन लोकपर अत्याचारक विरोध सेहो करैत छथि। फलतः रचना केवल 'आदर्श पुलिस'क प्रशस्ति नहि, लोकक दृष्टिसँ कानून-व्यवस्थाक नैतिक परीक्षा बनैत अछि।

एहि खण्डकेँ लम्बा गीत वा साधारण झारू सँ अलग देखबाक कारण एकर संरचनात्मक शृङ्खलाबद्धता अछि : एकहि संस्थागत व्यवहारकेँ क्रमशः विभिन्न नैतिक घटकमे विभाजित कएल गेल अछि। मुदा लम्बाई मात्र 'महा' होयबाक पर्याप्त कसौटी नहि। त्याग-विषयक महाझारू आ पुलिस-सुधारक महाझारू एकहि शीर्षक-परिवारमे रहितो विषय-व्याप्ति, तर्क-प्रवाह आ अभिप्रेत श्रोतामे भिन्न अछि। एतए कवि अपन उपविधाकेँ लचिला राखैत छथि, जे प्रयोगक शक्ति सेहो अछि आ कठोर विधा-परिभाषाक सीमा सेहो।

१३. भाषिक व्यवहार : मैथिली, मिश्रित शब्दावली आ काव्य-लय

कविताक भाषा ओकर लोकजीवनक निकट रहबाक प्रमुख साधन अछि। 'छै', 'होइतै', 'ककरा', 'केना', 'जँ', 'तँए' आ 'सभ'क मैथिली रूप, संगहि हिन्दी, संस्कृत, अङ्ग्रेजी आ कार्यालयी व्यवहारसँ आएल पद एक संग सुनाइत अछि। 'कंडीसन', 'कैमरा', 'फंड', 'कोर्ट', 'सी.ओ.' आ 'बी.डी.ओ.' सन शब्द गामक जीवनमे प्रवेश कएने आधुनिक सत्ता आ प्रविधिक नाम अछि। एहि बहुस्तरीय शब्दावलीमे मैथिली काव्यभाषा जीवनक वास्तविक बोलीसँ संवाद करैत अछि; लोकक अपन भाखामे शासन, विज्ञान, सामाजिक न्याय आ पर्यावरणक प्रश्न उठेबाक क्षमता एहि प्रयोगसँ स्पष्ट होइत अछि।

गीतमे मुखड़ाक पुनरागमन, अन्तिम ध्वनिक समानता, छोट आज्ञार्थक वाक्य आ बहुधा सटीक सम्बोधन एक श्रव्य लय उत्पन्न करैत अछि। 'अपन...', 'नव...', 'तँए...' सन आवर्तन-संकेत रचनाक भीतर सामूहिक पुनरुच्चारणक अवकाश बनबैत अछि। 'यौ' आ 'गै'क क्रमबद्ध पुनरागमन पद्यकेँ केवल अर्थक नहि, स्वरक सेहो पहचान दैत अछि। रचनाक गीतात्मक शक्ति एहि श्रव्य आयोजनमे अछि, यद्यपि किछु ठाम तुक कायम रखबाक व्यग्रतासँ वाक्य अप्राकृतिक बनैत अछि। एकरा गेय लोककविता आ उपदेशात्मक पद्यक सीमावर्ती रूप कहब अधिक समीचीन अछि।

तुकान्त ध्वनि कतहु सहज अछि, कतहु अर्थक घनत्व तुकक लेल ढीला पड़ैत अछि। उपदेशात्मक आवर्तनक कारण 'सत्य', 'ज्ञान', 'सेवा', 'मानवता', 'निष्ठा' सन शब्द अत्यधिक बेर अबैत अछि। एहि शब्दक सफलता तखन अधिक अछि जखन ओ ठोस संसारी विवरणसँ जुड़ैत अछि : खेतक दरार, स्त्रीक फाटल साड़ी, धुआँ छोड़ैत इंजन, गरीबक सूखल रोटी। कविता जतए केवल अमूर्त पदक क्रम होइत अछि, ओतए दार्शनिक प्रभावसँ बेसी भाषणात्मक प्रभाव बनैत अछि। ई असमानता ग्रन्थक आलोचनात्मक मूल्यांकनमे स्वीकार्य होयबाक चाही।

१४. 'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' : तुलनाक सम्भावना आ सीमा

'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' सम्बोधनकेँ साहित्यिक सन्दर्भमे देखल जाए तँ पहिल समानता लोकक संग प्रत्यक्ष संवादक अछि। भोजपुरीक भिखारी ठाकुर स्त्रीक दुःख, सामाजिक रूढ़ि, प्रवास आ परिवारक विघटनकेँ नाट्य–गीतक माध्यमसँ सार्वजनिक अनुभव बनौने छथि; झारूदार गीत आ झारूक माध्यमसँ दहेज, अज्ञान, भ्रष्टाचार, श्रम आ स्त्रीक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। दुनू ठाम भाषा लोकसँ दूर सौन्दर्याभ्यासक वस्तु नहि, लोकक पीड़ा आ आशाक माध्यम बनैत अछि। एहि दृष्टिसँ उपमा सहृदयताक रूपमे सार्थक अछि।

तथापि एकरा विधागत समानता मानि लेब उचित नहि। भिखारी ठाकुरक रचनात्मक संसारमे नाटक, पात्र, संवाद, अभिनय आ दर्शकक साझा दृश्यानुभव केन्द्रमे अछि; झारूदारक एहि काव्यसङ्ग्रहमे संक्षिप्त नीति-प्रहार, गेय सम्बोधन आ क्रमबद्ध महाझारू प्रमुख अछि। एक दिस नाटकीय पात्र अपन परिस्थिति जीबैत अछि, दोसर दिस गीतक वक्ता श्रोताकेँ सोझे बदलबाक आह्वान करैत अछि। एहि भेदक आदर कयलासँ उपमा प्रशंसा मात्र नहि रहि साहित्यिक तुलना बनैत अछि।

दुनू कविक जनोन्मुखतामे महत्त्वपूर्ण साम्य सामाजिक आत्मालोचनक साहस अछि। 'बिदेसिया' सन नाट्यपरम्परामे घर–बाहरक सामाजिक सम्बन्ध कथानकक माध्यमसँ खुलैत अछि; झारूदारक गीतमे 'सभ', 'अहाँ' आ 'हम' सामुदायिक उत्तरदायित्वक सम्बन्ध बनबैत अछि। झारूदारक काव्यशक्ति गीतक सामूहिक वाणीमे अछि, भिखारी ठाकुरक शक्ति नाट्य–स्थितिक संघर्षमे। 'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' तखन एक व्यापक जनसंवादपरक साम्यक नाम अछि, ऐतिहासिक वा कलात्मक एकरूपताक निर्णय नहि।

१५. 'पहिल जनकवि' आ मैथिली जनसाहित्यक इतिहास

पुस्तकक आरम्भमे रामदेव प्रसाद मण्डलकेँ 'मैथिलीक पहिल जनकवि' कहल गेल अछि। 'जनकवि'क वास्तविक अर्थ केवल प्रथम प्रकाशित होयब नहि, लोकक

अनुभवक प्रति संवेदनशीलता, जनभाषामे भाव व्यक्त करबाक क्षमता आ अन्यायविरुद्ध सार्वजनिक हस्तक्षेप सेहो अछि। एहि अर्थमे झारूदारक रचनासभ अपन जनमुखी पहचान सिद्ध करैत अछि। किन्तु 'पहिल' शब्द अलग ऐतिहासिक प्रश्न खोलैत अछि : मैथिलीक पूर्ववर्ती लोककाव्य, श्रमजीवी समुदाय, मौखिक रचना आ उपेक्षित छपल साहित्यक व्यापक इतिहासक बिना ओकर कालक्रमिक निर्णय सम्भव नहि। एहि दुनू प्रश्नकेँ अलग राखलासँ कविक वास्तविक उपलब्धिक महत्त्व कम नहि होइत।

प्रणव प्रकाशक २०२६क अध्ययन १९०१मे प्रकाशित बृज बिहारी लाल मण्डलक 'मिथिला नाटक'क उल्लेख करैत अछि, जाहिमे सामाजिक आलोचनाक एक भिन्न मैथिली परम्परा सोझाँ अबैत अछि। बृज बिहारी लाल मण्डल आ रामदेव प्रसाद मण्डल पृथक रचनाकार छथि; हुनकर कृति आ कालक भेद स्पष्ट रखबाक चाही। एहन अध्ययन याद दिअबैत अछि जे जनमुखी मैथिली साहित्यक इतिहास बहुतो स्वर आ विधा सँ निर्मित अछि। झारूदारक महत्त्व एहि बहुविध परम्परामे अपन विशिष्ट काव्यरूप आ सामाजिक चेतनाक कारण अछि।

उफाक पैकरक अनुसन्धान मैथिली मरसिया-साहित्य आ विभिन्न सामाजिक समूहक आवाजकेँ साहित्येतिहासमे स्थान दैत अछि; ललित कुमारक अध्ययन मैथिली मुद्रण आ भाषा-प्रतिष्ठाक जातिगत जटिलता दिशि ध्यान आकृष्ट करैत अछि। एहि सन्दर्भसभसँ 'जन'क अर्थ अधिक व्यापक होइत अछि : एतए केवल विषयमे गरीबक चर्चा नहि, साहित्यक वक्ता, श्रोता, भाषा आ सामाजिक स्थानक प्रश्न सेहो अछि। झारूदारक 'झारू' एकटा एहन काव्य-हस्तक्षेप अछि जाहिमे साधारण लोक स्वयं सामाजिक निर्णयक सम्बोधित पक्ष बनैत छथि।

तेँ 'मैथिलीक पहिल जनकवि' एक प्रतिष्ठासूचक सम्बोधनक रूपमे कविक लोकपक्षधर छवि स्पष्ट करैत अछि, मुदा इतिहासक निश्चित क्रम स्थापित करबाक लेल एकरासँ बेसी साक्ष्य चाही। ई आलोचनात्मक अन्तर झारूदारक सम्मानकेँ घटबैत नहि; हुनकर काव्यक सचमुच विशिष्ट तत्त्वकेँ पैघ स्थान दैत अछि। संग्रहमे 'झारू'क

सामाजिक रूपक, छोट पद आ गीतक युग्म, लोकभाषाक निरन्तर सम्बोधन तथा ज्ञान–कर्म–मानवताक दीर्घ पद्य-शृङ्खला जनमुखी रचनाक एक उल्लेखनीय रूप विकसित करैत अछि।

१६. बिम्ब, व्यंग्य आ लय : झारूदारक काव्यशक्तिक परीक्षा

झारूदारक बिम्बविधानक केन्द्र लोकोपयोगी वस्तु आ लोकक अनुभव अछि। 'घुन' दहेजक भीतरी क्षयक बोध करबैत अछि; 'कफ़न' एहि सामाजिक प्रथाक प्राणघातकता व्यक्त करैत अछि; 'फाटल साड़ी' स्त्रीक परवशताकेँ दृश्य रूप दैत अछि; असिंचित खेतक दरार विकासक अनुपस्थितिक मौन भाषा अछि। एहि बिम्बसभक प्रभाव एहीमे अछि जे ओ दूरस्थ बौद्धिक तर्ककेँ दैनिक जीवनक स्पर्शसँ जोड़ैत अछि। ठोस छवि उपस्थित भेला पर कविता स्वाभाविक रूपसँ मार्मिक होइत अछि; केवल सदाचारक सूची देलापर ओकर संवेदनात्मक गहिराइ घटैत अछि।

व्यंग्यक स्वरमे कवि प्रायः निन्दाक अपेक्षा प्रतिप्रश्नक बाट चुनैत छथि। नेता–अफसर, पंचायत, धर्मक नामपर व्यापार करएबला आ घूसखोर अधिकारी पर हुनकर आलोचना लोकभाषाक सीधा कटाक्ष अछि। कतहु कवि व्यावहारिक स्थिति उलटि दैत छथि—जनसेवक जनताकेँ सेवा देबाक बजाय अपन पेट भरैत अछि; धर्मक पथ लोककेँ दया सिखएबाक बजाय व्यापारमे फँसा दैत अछि। एहन अर्थ-विपर्यय पाठककेँ हँसाबैत कम, असुविधाजनक आत्मपरीक्षा दिशि बेसी लऽ जाइत अछि। तथापि पात्रविशेष, घटना आ स्थितिक व्यापक चित्रणक अपेक्षा नैतिक आरोपक बहुलता हुनकर व्यंग्यकेँ कखनो एकरस बनबैत अछि।

छन्दक औपचारिक गणनाक अपेक्षा कवि सम्बोधन, तुक, आवर्तन आ छोटी पङ्क्तिक स्मरण-शक्ति पर अधिक भरोसा करैत छथि। 'यौ'क पुनरागमन लोकसँ सम्बन्धक ध्वनि अछि; 'गै' स्त्री-समुदायसँ निकटक वार्तालापक स्वर रचैत अछि; 'रौ' कखनो स्नेहिल अनुशासनक संकेत दैत अछि। एहि उच्चारणमे गेयताक सम्भावना अछि, यद्यपि सभ गीत समान लयात्मक परिष्कार नहि पबैत। झारूदारक उपलब्धि शास्त्रीय

लक्षण-निर्वाहक कठोरता नहि, काव्यकेँ लोकक बीच पुनः सम्बोधनक घटना बनएबाक चेष्टा अछि।

१७. सामाजिक परिवर्तनक काव्यगत अन्तर्विरोध

झारूदारक कविता एकरूप विचारतन्त्र नहि अछि। 'प्रार्थना'क विनय आ 'झारू'क फटकार, 'झंडा गीत'क राष्ट्रीय गौरव आ पंचायत-व्यवस्थाक निर्भीक आलोचना, स्त्रीक आत्मनिर्णय आ रामायणक गृहस्थ मर्यादा, वैज्ञानिक ज्ञानक आग्रह आ धार्मिक प्रतीकक सहारा—एहि सभक सहअस्तित्व कविता-विश्वकेँ जटिल बनबैत अछि। ई भिन्नतासभकेँ मात्र दोष कहि नकारब उचित नहि; ई ओहि समाजक अन्तःसंघर्ष सेहो अछि जाहिमे परम्परा छोड़े बिना परिवर्तनक भाषा खोजल जा रहल अछि। मुदा कविताक सफलता ओहि ठाम सर्वाधिक अछि जतए सुधारक वाक्य सामान्य उपदेशसँ ऊपर उठि लोकक ठोस स्थिति आ अनुभवक बिम्ब बनैत अछि।

एहि काव्य-जगतक दोसर महत्त्वपूर्ण अन्तर्विरोध व्यक्तिक सदाचार आ संस्थागत सुधारक सम्बन्ध अछि। कवि भ्रष्ट लोककेँ सुधरबाक लेल कहैत छथि, मुदा संगहि असिंचित खेत, सरकारी कोष, पुलिसक अत्याचार आ पंचायतक अन्याय जेहन ठोस प्रश्न उठबैत छथि। एतए नैतिक सुधारक विश्वास आ व्यवस्थागत आलोचना दुनू एक-दोसरकेँ प्रेरित करैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ पुस्तकक विशिष्टता ओहि बिन्दुपर खुलैत अछि जतए 'सत्य' आ 'सेवा' सन अमूर्त आदर्श भूख, श्रम, नारी-अधिकार आ न्यायिक व्यवहारक ठोस राजनीतिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

१८. समग्र साहित्यिक मूल्याङ्कन आ निष्कर्ष

'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै' अपन समयक सामाजिक रोगसभपर सीधा प्रहार करबाक कारण महत्त्वपूर्ण अछि। कवि दहेजकेँ विवाहक भीतर बसल घुन देखबैत छथि, स्त्रीक परवशताकेँ फाटल साड़ीक दृश्यसँ जोड़ैत छथि, गरीबीकेँ खाली पेट आ कोदो–मरुआक भोजनसँ मूर्त करैत छथि, आ खेतक दरारकेँ शासनक सोझाँ देखाएल

जाएबला साक्ष्य बनबैत छथि। एहि प्रसंगसभमे लोकक अनुभव कविता बनैत अछि। झारू नामक उपकरण कविक विचार, भाषा आ सामाजिक भूमिका तीनूकेँ एकमे जोड़ि दैत अछि : गीत कहब समाजकेँ 'बहारबाक' संकल्पमे बदलि जाइत अछि।

एहि उपलब्धिक संग सीमा सेहो देखाइत अछि। नैतिक आग्रहक अत्यधिक पुनरावृत्ति कतहु पद्यकेँ भाषणक निकट पहुँचा दैत अछि; 'ज्ञान' अथवा 'विज्ञान'क उदाहरण कतहु अपर्याप्त जटिलतासँ प्रस्तुत अछि; स्त्रीक स्वायत्तता आ आदर्श गृहस्थ-नारीक कल्पना एकहि काव्यलोकमे असहज सहस्थिति रखैत अछि। शासनक आलोचना आ विकासक आशावादी प्रशंसा सेहो एक-दोसरकेँ प्रश्न करैत अछि। मुदा ई तनाव संग्रहकेँ जीवित सामाजिक दस्तावेज बनबैत अछि—एहि कवितामे यथास्थिति आ परिवर्तन, परम्परा आ प्रश्नाकुलता, श्रद्धा आ प्रतिरोध संग-संग चलैत अछि।

'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' आ 'पहिल जनकवि' सन सम्बोधनक महत्त्व कविक व्यापक लोकपक्षधर आकांक्षा बुझबामे अछि; हुनकर रचनात्मक मूल्यकेँ केवल उपाधिपर निर्भर कराएब अनावश्यक अछि। भिखारी ठाकुरसँ तुलना गीत–नाटकक विधागत अन्तर स्वीकृत करैत करब उचित अछि, आ 'पहिल'क ऐतिहासिक प्रश्न मैथिलीक विविध जनसाहित्यिक परम्पराक प्रकाशमे देखबाक चाही। झारूदारक अपन कविता-क्षेत्रमे उपलब्धि स्पष्ट अछि : लोकक भाषा, प्रत्यक्ष आह्वान आ सामाजिक आत्मालोचनक शिल्पकेँ ओ एक पहिचान-योग्य काव्यरूप दैत छथि।

समग्रतः एहि काव्यसङ्ग्रहक मूल्य लोकचेतनाक संवाहक कला होयबामे अछि। एकर सशक्त गीत लोककेँ करुणाक पातर नहि, बदलाबक सक्रिय सहभागी मानैत अछि; बेहतर क्षणसभमे व्यंग्य मात्र दोष नहि गनबैत, दोषक सामाजिक परिणामक प्रतिमा सेहो गढ़ैत अछि। मैथिली आलोचनाक लेल झारूदार महत्त्वपूर्ण एहि कारण छथि जे हुनकर रचनामे साहित्यिक प्रतिष्ठाक मापदण्ड फेर सँ विचारबाक चुनौती उपस्थित अछि : की कविता केवल सौन्दर्यक निजी साधना अछि, अथवा समाजकेँ अपन परिचित अन्याय नब आँखिसँ देखएबाक सार्वजनिक कलासँ सेहो ओकरा मापल

जायत? 'हमरा बिनु जगत सुन्ना छै' एहि प्रश्नक एक विशिष्ट आ विवादोन्मुख उत्तर प्रस्तुत करैत अछि।

सन्दर्भ–ग्रन्थसूची

1. मण्डल, रामदेव प्रसाद 'झारूदार'। हमरा बिनु जगत सुन्ना छै : गीत आ झारू। नई दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१२। ISBN 978-93-80538-70-9।

2. ठाकुर, गजेन्द्र। 'आमुख'। रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', हमरा बिनु जगत सुन्ना छै। नई दिल्ली : श्रुति प्रकाशन, २०१२।

3. Paiker, Ufaque. "Shadings of Languages: A Study of Maithili Marṡīya in Nineteenth-Century Bihar." Asian Ethnology 85, no. 1 (2026). https://doi.org/10.18874/ae.85.1.04

4. Prakash, Pranav. "A Cowherd's Chapbook: An Inquiry into the Ethics of Literary Historiography." Asian Ethnology 85, no. 1 (2026). https://doi.org/10.18874/ae.85.1.06

5. Kumar, Lalit. "Caste, Script and Language: The Curious Case of Maithili Print." Society and Culture in South Asia. प्रथम ऑनलाइन प्रकाशन : ३० मई २०२५। https://doi.org/10.1177/23938617251337694

6. Shubhangi. "Migration, Marriage and Motherhood: A Close Reading of Bhikhari Thakur's Selected Plays." Thespian, Year 11, Issue 17-22 (2024), pp. 134–154. https://doi.org/10.63698/thespian.v11.1.su.10

7. Ranjan, Rakesh. "Ideology of the Dramatic Themes of Bhikhari Thakur." Research Review International Journal of

Multidisciplinary 11, no. 2 (2026). https://doi.org/10.31305/rrijm.2026.v11.n02.013

8. Sinha, Nitin. “The Idea of Home in a World of Circulation: Steam, Women and Migration through Bhojpuri Folksongs.” International Review of Social History 63, no. 2 (2018): 203-237. https://doi.org/10.1017/S0020859018000184

9. Emsley, Clive. “Introduction: What’s in a Name?” A Short History of Police and Policing. Oxford : Oxford University Press, 2021. https://doi.org/10.1093/oso/9780198844600.003.0001

10. भारत सरकार। भारतक संविधान, अनुच्छेद ५१क (मौलिक कर्तव्य)। India Code, विधि आ न्याय मन्त्रालय। https://indiacode.gov.in/server/api/core/bitstreams/2bd776ff-891e-444c-9344-f63df7b299fc/content

नित नवल
रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’

साहित्यिक समीक्षा-संग्रह · गजेन्द्र ठाकुर

‘झारू’ घर-आँगनक साधारण वस्तु अछि; ‘झारूदार’क कविता ओकरा समाजक भीतरक मैल हटेबाक औजार बना दैत अछि — जातिक घमण्ड, भूख, दहेज, सत्ताक छल आ अन्धविश्वासक विरुद्ध। एहि पोथीमे **‘गीतांजलि झारू’** (२०१८) आ **‘हमरा बिनु जगत सुन्ना छै’** (२०१२) क निकट-पाठ अछि।

समीक्षा जनकविक नैतिक साहसक संग उपदेशक विस्तार आ बिम्बक सीमा सेहो जाँचैत अछि।

“पैघ नहि कियो जाति लऽ कऽ
पैघ नहि कोनो धर्मसँ”

गीतांजलि झारू : झारूक रूपक आ जनपक्षधर काव्यचेतना

हमरा बिनु जगत सुन्ना छै : लोकजीवनक काव्यभाषा आ जनचेतना

विदेह वेबसाइट
www.videha.co.in

विदेह ई-जर्नल (GitHub)
videha-ejournal.github.io/videha

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X | © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७
सम्पादक : विदेह